चतुर्थ–अध्याय

मनोवैज्ञानिक दृ" ट से हिन्दी–पंजाबी उपन्यासों के नारी चरिंजों का वर्गीकरण

निर्दिष्ट काल के उपन्यासों में नारी व्यक्तित्व के विश्लेषण के आधार स्वरूप मानस–शास्त्र की व्याख्या उपादेय है। विभिन्नता के आधार पर अनेक प्रकार से व्यक्तियों का वर्गीकरण किया गया है। प्राचीनतम भारतीय आयुर्वेद में बात, कफ और पित्त इन तीन प्रकृति के चरित्रों का वर्णन है। धर्मशास्त्रों में सात्विक, राजसी, तामसी तीन प्रकार के चरित्रों का वर्णन है। युंग ने दो प्रकार के व्यक्तित्व का उल्लेख किया है बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी। नारी व्यक्तित्व के बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी चरित्रों की व्याख्या द्वारा मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों को सहजता से समझा जा सकता है। प्रस्तुत अध्याय में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हिन्दी–पंजाबी उपन्यासों में नारी चरित्रों का वर्गीकरण करने का प्रयास किया गया है।

4-1 **बहिर्मुखी चरित्र :**

बहिर्मुखी व्यक्तियों में सामाजिकता के गुण पाये जाते हैं। ये संतुष्ट, प्रसन्नचित एवं उदार हृदय होते हैं। इन्हें एकान्तवास नापसन्द है। ये व्यवहार कुशल एवं आत्मविश्वासी होते हैं। बहिर्मुखी व्यक्ति वातावरण के अनुसार अपने को समायोजित कर लेते हैं। लज्जा और भय–संवेग की इनमें न्यूनता होती है। इनमें प्रगतिशीलता की प्रवृत्ति प्रबल रूप से पाई जाती है। बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक होने के कारण संघो, समूहों, पार्टियों तथा सम्प्रदायों में रहकर सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करने को लालायित रहते हैं। समाज–सुधारक, नेता, देश–प्रेमी, वीर इत्यादि प्रायः बहिर्मुखी चरित्र के ही होते हैं।

मृदुला गर्ग के उपन्यास 'मैं और मैं' की नायिका माधवी विशाल हृदया बहिर्मुखी नारी चरित्र है। ''.....कितना प्यारा पति पाया है उसने भारतीय पुरुष पत्नी के अकेलेपन की जरुरत को समझे ! ऐसा पति जिस स्त्री का हो उसे और क्या चाहिए?''[1] माधवी अपने जीवन के प्रत्येक क्षण की खुशी पति राकेश से बाँटना चाहती है। कथाकार माधवी के उपन्यास को जब 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' द्वारा पुरस्कृत किया जाता है तब वह पति के समक्ष अपनी इस खुशी को प्रकट करने के लिए इतनी बेचैन हो उठती है। उसके सम्पूर्ण शरीर में खुशी से बिजली का करंट सा दौड़ गया। शिवानी के उपन्यास 'चल खुसरो घर आपने' की गोदी को विपदाओं ने बहिर्मुखी चरित्र की नारी बना दिया है। पति के देहावसान पश्चात दो पुत्रियों कुमुद और उमा एवं एक पुत्र लल्लू के भरण–पोषण का दायित्व उसके अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की परतों को उधेड़ देता है। पुत्री के हिरासत में बंदी होने पर वह पुलिस से साहसपूर्वक पूछती है ''पर क्या किया है मेरी बच्ची ने, जो तुमने उसे थाने में बंद कर दिया है?''[2] शिवानी के उपन्यास ''कैंजा'' की नन्दी अविवाहित होकर भी विक्षिप्त कमला के नवजात शिशु रोहित को रुई के फाहे से दूध पिलाकर जीवन दान देती है। वह रोहित के सुख में ही अपना सुख समझती है। उसके मुख पर तनिक भी उदासी देखकर वह घबराकर पूछती है– ''क्यों बेटा, आज उदास क्यों हो.....क्या बात है रोहित.....।''[3] रोहित की खुशी के लिए और उसे पिता का नाम दिलवाने के लिए नंदी, अपराधी सुरेश भट्ट से परिणय करती है। वह सबसे कहती है ''मैंने उससे कहा है, कि उसके पिता से आज तक मेरी अनबन थी, अब मेल हो गया है। मैं उसकी सगी माँ हूँ, यही वह जानता है। मैं नहीं चाहती, अब कोई

उससे यह कह दे कि मैं उसकी माँ नहीं, कैंजा हूँ।''[4] नंदी का चरित्र इतना बहिर्मुखी है। उसकी उदारता हमें आश्चर्यचकित कर देती है। उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका' की विद्या विमाता रूप में भी उदार हृदय गांभीर्यता ग्रहण किए हुए है। विद्या जब राधिका के पिता से परिणय करना चाहती है तब राधिका इसका विरोध कर गृह–त्याग कर जाने लगती है। विद्या कहती है ''मेरे कारण तुम्हें घर छोड़कर जाने की जरूरत नहीं है।''[5] राधिका अपनी युवा विमाता से सदैव वितृष्णा करती है। फिर भी विद्या उससे अत्यधिक स्नेह करती है। वह उसके विवाह के लिए चिंतित है ''ऐसे जल्दी में किए गए विवाह से शायद तुम सुखी न हो क्योंकि .....प्रायः देखा गया है, कि जो लड़कियां इलेक्ट्रा–काम्पलेक्स से ग्रसित होती हैं, वे विवाह कर सुखी नहीं होतीं।''[6] शिवानी के उपन्यास 'माणिक' की नलिनी मिश्रा ने अपने पिता के आकस्मिक देहावसान पश्चात जिस अमानवीय धैर्य का परिचय दिया उसे देखकर आत्मीय स्वजन भी दंग रह गए थे। नलिनी ने अपनी बहन रमा के अपराध को क्षमा कर, उसके लिए अपना यौवन बलिदान कर दिया। वह रमा से कहती है ''मैं तेरी शादी ऐसे शहजादे से करुँगी, जो रूप में, गुण में, खानदान में कहीं भी तुझसे हार न माने।''[7] नलिनी अपने अन्तस में सागर सा विशाल हृदय समेटे है। उसने रमा का विवाह अभियन्ता रमेन्द्र से कर दिया। रमा का इकलौता पुत्र बिन्नू तो नलिनी की आँखों का तारा था। नलिनी ने माणिक की अँगूठी छोड़कर सब कुछ रमा के नाम लिख दिया। 'चल खुसरो घर आपने' की कुमुद अपनी अनुजा उमा की सम्पूर्ण इच्छाओं की पूर्ति हेतु रामकमल सिंह की पत्नी

की परिचारिका बनती है। उस हवेली में भी उसका मन प्रति क्षण उमा की स्मृतियों में डूबता उतराता है ''तुम अपनी उम्र से बहुत छोटी लगती हो दीदी, सब हमसे पूछते हैं, तुम बड़ी हो या कुमुद? हमें अच्छा नहीं लगता, अब तुम जूड़ा बनाया करो, दीदी ?''[8] उमा को पुलिस जब हिरासत में लेती है तब कुमुद बड़ी धैर्यता से बिना किसी को खबर पहुँचाए उसे छुड़ाकर लाई। कुमुद उसके विवाह के लिए राजकमल सिंह से रुपयों की याचना करती है ''मेरी छोटी बहन की शादी है, आप यदि कृपा कर कुछ रुपये मेरे वेतन से दे सकें सर, मैं सब चुकता कर दूँगी..... ।''[9] यह कहकर कुमुद अत्यधिक अचम्भित कर देती है। 'कृष्णकली' की माणिक अनुज पन्ना के लिए अपने परिणय को भी अस्वीकार देती है ''.....जिसने तेरे लिए सजी–सजायी दुलहन की डोली को लात मारकर ठुकरा दिया, उसी को तू नागिन सी डसकर अब प्रणाम करने आयी है?''[10] माणिक के इतने त्याग–पश्चात भी उसकी बहन पन्ना उसे अकेला छोड़ कर उससे विलग हो जाती है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खम्भें लाल दीवारें' की सुषमा अपने भाई–बहनों हेतु होस्टल–वार्डन के कार्यभार को संभालती है। होस्टल–अवकाश पर जब वह घर जाती तो ''जीजी मेरे लिए जैकेट लाई हो?.....जीजी, क्या सच मैं डाक्टर बन सकूंगी? उसका उजला, तरुण मुख उसकी सारी आशंकाएँ प्रतिबिम्बित कर उठा।''[11] वह अपने भाई–बहनों के लिए अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं की आहुति दे देती है। वह अपने प्रियतम नील के विवाह–प्रस्ताव को भी अपने बहन–भाइयों के लिए अस्वीकार कर देती है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास 'मेरा नरक अपना है' की आशा अनुज हीरेन के लिए आजीवन अविवाहित रहती है। वह अपने पाँच वर्षीय भाई हीरेन का अत्यधिक लाड–प्यार से भरण–पोषण कर उसका विवाह करती है। उसको आशीर्वाद देती है कि उसका दाम्पत्य–जीवन सदा सुखी हो।

हिन्दी उपन्यासों में नारी पात्रों के बहिर्मुखी चरित्र उस मानसिकता के द्योतक हैं, जो रक्त सापेक्ष सम्बन्धों को अधिक दायित्व पूर्ण मान लेते हैं। 'पचपन खम्भें लाल दीवारें' की सुषमा और 'मेरा नरक अपना है' की आशा के मनोविश्लेषण में यह वृत्ति अधिक प्रबल है।

पंजाबी महिला उपन्यासकारों ने भी नारी पात्रों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करने की यथेष्ट चेष्टा की है। जसवन्त कौर के उपन्यास 'बलिदान' की इन्दरा के पति, मनमोहन हैं। मनमोहन अपनी मसेरी बहन पेमी के प्रणय–प्रपंच में आबद्ध है। इन्दरा दीप–शिखा सी जल–जलकर आलोक लुटाने की क्षमता रखती है। वह रोगग्रस्त होने पर भी उसकी भोजन–व्यवस्था का उचित प्रबन्ध करती है। पेमी जब कुछ दिनों के लिए तरन–तारन जाती है। तब वह उसे पत्र–व्यवहार न करने का उपालम्भ देती है–''राणी। तूं तां अॅख ओहले परदेश वाला हिसाब कीता। चाचे कोल जाके भैण नू भुल ही गई।''[12] पेमी सोचती है, इन्दरा कितने उच्च और आदर्श विचारों की है और वह तुच्छ विचारों की। इन्दरा विशाल हृदय से उसे सब कुछ दिए जा रही थी और वह उसका शेष भी चुरा रही थी। इन्दरा पेमी को आशीर्वाद देती है। ''पेमी तू मेरी छोटी भैण है। रहिंदी दुनियां तक मैं एहो ही प्रार्थना करांगी, कि परमात्मा तेरे सारे अपराध खिमा करे.....।''[13] इतना ही नहीं

रुग्णावस्था में वह पेमी की सेवा कर उसे रोग मुक्त करती है, ''पेमी मेरी ही सेवा नाल तूं जुग–जुग सुहागवन्ती रहु, इस तो वध मेरे चंगे भाग होर की हो सकदे हन?''**14** इन्दरा के इस रूप से पेमी भी प्रभावित होकर कहती है ''जीजी, तुसी किस धातु दे बणे होए हो, एह शायद मैं आपणे जीवन विच ना समझ सकांगी कोई वी नहीं समझ सकेगा।''**15** इन्दरा अपने पति मनमोहन से प्रार्थना करती है कि वह पेमी को सुखी रखें ''मेरे सवामी हुण तुसी मेरी छोटी भैण नू अमिट पिआर दिआ उसदा जीवन सुखी बणाओ''**16** इन्दरा की इस त्यागमयी प्रवृत्ति से उसका बहिर्मुखी व्यक्तित्व अधिक मुखर हो उठा है।

अमृता प्रीतम के उपन्यास 'एकता' की प्रिया अपनी सौतेली बेटी विक्की से सद् व्यवहार करती है। प्रिया विक्की को वह सम्पूर्ण अधिकार देती है, जो एक माँ को अपनी बेटी को देने चाहिए। वह उसे माँ की ममता, प्रेम–वत्सलता के आँचल से ढ़क लेती है इसलिए वकील साहब उससे कहते हैं ''विक्की तेरी सगी बेटी ऐ मैं तेरा सौतेला पति हाँ।'' 'इक सवाल' की नायिका वीरां का विधुर शाह जी से परिणय होता है। वीरां ऋणग्रस्त पिता की मुक्ति हेतु इस अनमेल विवाह को स्वीकारती है। वह विपुत्र जगदीप पर अपना सम्पूर्ण स्नेह लुटाती है। जब जगदीप शहर से लौटता है और उसके चरण–स्पर्श करता है। तब वह उसे आशीर्वाद देती है ''जीउंदा रहे दीपिया'', ''.....तू पिंड क्यों नहीं से आउंदा।''**17** 'रंग दा पत्ता' की कैली का विपन्नतावश अधेड़ लखे साहूकार से परिणय होता है। वह विमाता रूप में अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं का आरोपण कर आदर्श स्थापित करती है। ''वह बच्चों के

उज्ज्वल भविष्य के लिए सदैव चितांतुर रहती है। वह अपने बच्चों को स्कूल में दाखिल करवा देती है। वह उनकी दुर्भावनाओं का निराकरण कर सद्भावों की प्रेरणा देती है।''**18** 'अग्ग दी लकीर' की नंदा अपने भाइयों के प्रति प्रेरणा एवं शक्ति का केन्द्र है। वह अपने भाइयों से हास–परिहास भी करती है। ''भाई जान अब भाभी ले आओ। नहीं तो बहिन के रोज सड़े हुए टोस्ट खाने पड़ेगें।''**19** इस तरह के हँसी–मजाक तो उनकी दिनचर्या में जुड़े हुए थे। वह भाइयों की अस्त–व्यस्त वस्तुओं को संभालती है। वह परम की पेंटिग की प्रशंसा कर उसे नई पेंटिग बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। रवि को तो अपनी बहन के परिणय की चिन्ता ही सताती रहती है। वह नंदा के विवाह के लिए अपने कनाडा वाले मित्र से पत्र–व्यवहार भी करता है। नंदा का बहिर्मुखी चरित्र सहज स्वाभाविक बन पड़ा है।

दलीप कौर टिवाणा के उपन्यास 'वाट हमारी' की किरन अपनी बहन कंवल को प्रेम–षड़यन्त्र से सावधान रहने का परामर्श देती है। ''नहीं कंवल भैण जी बहुते लोक सिरफ फलटर करना चाहुंदे ने। .....आख के तां सारे ही इऊं जांदे ने। मेरा ख्याल है काफी देर हो गई शायद हुण तां उसदा खत वी कोई नहीं आइया?.....''**20** वह कंवल दीदी को देर रात्रि तक घर से बाहर न रहने की हिदायत देती है, ''जीतू आखदा सी बड़ी–बड़ी रात गई घर मुड़दे हो। बेजी गुस्से हुंदे रहिंदे ने .....पर भैंण जी तुसी आपणी जिंदगी बारे की सोचदे हो?.....कंवल भैण जी सच जाणना मैंनू तुहाडा फिकर ही लगिया रहिदां ऐ।''**21** 'वाट हमारी' की किरन अपनी बहन को ऊर्ध्वगामी बनने की प्रेरणा देती है। हरप्रीत कौर के उपन्यास 'हड्ड माँस दी औरत'

की पालो अत्यन्त स्नेहिल नारी है। वह बेगानों को भी अपना बनाने में सिद्धहस्त है। वह अपनी ममेरी बहन बन्सों के पति की पिटाई से रुष्ट होकर गृह त्यागने पर उसे समझाती है ''हे भैण बन्सो तेरी सिआणी बिआणी दी मत ते नहीं मारी गई, इक तां सुदाई हो गया तां, तू ई अकल कर उस झुडू दा की ऐ घर लुटा छडू आखर घर बार तां तेरा ई.....।''[22] वह अपनी बहन के अपशब्दों को भी अनसुना कर उसका परिवार टूटने से बचा लेती है।

हिन्दी उपन्यासों की भांति पंजाबी उपन्यासों में भी नारी पात्रों के व्यक्तित्व के रहस्यों का अनावरण इसके प्रतिमान के संदर्भ में है। नारी पात्रों के बहिर्मुखी चरित्र जिस मानसिकता की प्रस्तुति या प्रदर्शन करते हैं। वह निर्दिष्ट विषय की वैज्ञानिक खोज के लिए सहायक है।

4.2 **अन्तर्मुखी चरित्र :**

'अचेतन मन के क्षतिपूरक व्यापार' के सिद्धान्त द्वारा मानसशास्त्री युंग ने सिद्ध किया है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व किसी एक क्षेत्र में अतिविकसित होते हैं परन्तु अनेक अन्य क्षेत्रों में असम्पूर्ण तथा अपरिचित से रहते हैं। ''अन्तर्मुखी व्यक्तित्व लज्जालु और कायर होता है। नई परिस्थितियाँ उसे सुहाती नहीं हैं। भय के कारण हर कार्य वह बड़ी सजगता से करता है। एकान्त प्रेमी तथा विचारक होने के नाते वह मित्र बनाने की अपेक्षा कल्पना लोक में अधिक जीना चाहता है। ''[23]

अन्तर्मुखी चरित्रों को सामान्यतः मैंने तीन उपवर्गों में विभाजित किया है :–

1. अभ्यन्तर संश्लिष्ट
2. आत्म विभाजित
3. आत्म–निर्वासित

1. अभ्यन्तर संश्लिष्ट (नारी चरित्र) :

अभ्यन्तर संश्लिष्ट नारी चरित्रों से तात्पर्य ऐसे वर्ग से है, जिनका जीवन भीतर और बाहर किसी भी भांति आहत नहीं होता। ये नारी चरित्र सामाजिक मूल्यों और जीवन के सह अस्तित्व को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। हिन्दी–पंजाबी उपन्यासों के नारी–चरित्र इसी अर्थ में अभ्यन्तर संश्लिष्ट हैं। वे जिस समाज के अंग हैं उसके जीवन–मूल्यों को प्रतिफलित करने में उनका व्यवहार संयोजित था, किन्तु सामाजिक परिवेश के परिवर्तन और औद्योगिकीकरण के कारण उपन्यासकार जिन परिस्थितियों से साक्षात्कार कर रहे थे, वे परिस्थितियाँ नारी–चरित्रों के आदर्शों और इच्छाओं के प्रतिकूल थीं। यही कारण है कि अधिकांश नारी–चरित्र प्रचलित सामाजिक मूल्यों के विपरीत आचरण करते हैं। सामाजिक जीवन से उनकी टकराहट होती है। जिसका प्रभाव चरित्रों के जीवन पर परिलक्षित होता है। अभ्यन्तर संश्लिष्ट चरित्र तनावों के भीतर भी अपने को असामाजिक नहीं समझते। वे समाज के निरन्तर विकास के लिए प्रयत्नशील होते हैं।

शिवानी के उपन्यास 'चौदह फेरे' की नंदी अभ्यन्तर संश्लिष्ट वर्ग के नारी–पात्रों की एक प्रखर अभिव्यक्ति है। नंदी अपनी सौत मल्लिका की रति–क्रीड़ा से तनाव–ग्रस्त हो जाती है। ''एकाएक नंदी का चित्त खिन्न हो गया। संसार में कौन ऐसी पत्नी होगी जिसका हृदय अपने पति के पार्श्व में बैठी सौत को देखकर खिन्न नहीं हो उठता, और मल्लिका सरकार उसकी सौत ही तो थी.....।''[24] नंदी यह देखकर अपने पति के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं, कहती। वह गृहस्थी से विरक्त हो जाती है। परम्परित नैतिक भाव से वह अपने आन्तरिक संतुलन की रक्षा करने में समर्थ हो जाती है।

'किशनुली' की काखी को उन्मादिनी किसना पर दया आती है ''..... खबरदार जो अब इसे पगली कहा आज से इसका नाम है किसना.....।'' किसना के क्षय–रोग से मृत्यु–ग्रस्त होने पर वह अपने गहने गिरवी रख देती है। ''.....गया जाकर मैंने करन के हाथों, उसकी किरिया करवाई .....उसे अपना स्वर्ण सतलड़ बारह तोले का भेंट दे दिया।''[25] काखी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को नियंत्रित करने वाला सूत्र है उसका वंशानुगत आदर्श संवेग। काखी का आदर्श प्रेम–संवेग उसके सम्पूर्ण जीवन को नियंत्रित करता है।

'कृष्णकली' की कुन्ती का परिणय प्रवीर से होता है। वह अपनी वाकपटुता से प्रवीर को हनीमून के लिए मना लेती है, ''जरा सोचिए तो डैडी को कैसे लगेगा। उन्होंने मि0 कोल को लिखकर शायद कमरा भी बुक करवा लिया है।''[26] वह न केवल वाकपटुता में प्रवीण थी बल्कि पति के प्रेम–व्यापार से ''कुछ ही दिनों में वह उस अपरिचित व्यक्ति के पीछे–पीछे किसी अदृश्य जादुई डोर से बंधी घूमने लगी थी।''[27] जब प्रेम का आवेग प्रबलतम अवस्था में होता है, तब सांसारिक मर्यादाएं एवं सामाजिक बंधन शिथिल हो जाते हैं। प्रेम के आधिक्य में सांसारिक बन्धनों का भय–संवेग लुप्त हो जाता है। प्रेम में सांसारिक मर्यादा की समाप्ति ही प्रेमी और प्रेमिका का मिलन–बिन्दु स्थल है। कुन्ती भी इसी प्रेम के आवेग की प्रबलता से प्रवीर के प्रणय में आबद्ध है।

'सुरंगमा' की विनीता स्वेच्छापूर्वक दिनकर पांडे को पति वरन करती है। पति के गिरते स्वास्थ्य से वह चिंतित हो उठती है। पति को मानसिक तनाव और

शारीरिक क्लांति से मुक्ति दिलाने के लिए वह उसे लक्ष्मण–रेखा में घेरकर मूँद लेती है। विनीता बुद्धिवादी है। उसमें नारी सुलभ ईर्ष्या की प्रबलता है। उसमें विचारों की प्रधानता है। 'सुन्दरी सुरंगमा' के प्रति पति का आकर्षण उसे असहनीय है। अहम् प्रधान व्यक्तित्व वाली विनीता का इड ही अधिक शक्तिशाली तथा क्रियाशील है। इसी कारण विनीता भी पति–पत्नी के बीच सुरंगमा की अनायास उपस्थिति से एक चोट खाई नागिन सी क्रुद्ध हो उठती है। फिर भी वह भीतर से टूटती नहीं है। वह यथास्थिति बनाए रखना चाहती है। यह एक अलग बात है कि आन्तरिक संश्लिष्टता की रक्षा करने में उसके व्यक्तित्व का स्वाभाविक–विकास अवरुद्ध सा हो गया है।

'डार से बिछुडी' उपन्यास की पाशो अल्हड़ युवती है। खत्री परिवार में जन्मी पाशो का परिणय दीवान लखपत राय से हुआ। ''मैं गहने कपड़े से लदी दीवान जी के लाड़–प्यार में इठलाती–दिन भर दीवान जी के सुहाग भरे बोलों पर रीझती रही।''[28] दुर्भाग्य पाशो की खुशी छीनने के लिए कमर कसे हुए था। पाशो के पति की मृत्यु हो गई। घर की एकरसता, पति की मृत्यु और ससुराल के जीवन की सशंक–परिस्थितियाँ उसके भीतर उथल–पुथल मचाती रहती हैं। दुख के प्रति प्रारम्भ से ही पाशो के भीतर एक विचित्र सहजता का भाव है। लेखिका ने पाशो के रूप में नारी–मन की भावनात्मक आशा–आकांक्षाओं के नष्ट हो जाने पर उसके हृदय में घुमड़ते निःशब्द हाहाकार का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

'शेष यात्रा' की अनुका के पति प्रणव कामुक–प्रवृत्ति की अधिकतावश युवतियों के संसर्ग में तृप्ति पाते हैं। अनु इसके विपरीत एकनिष्ठ पत्नीत्व की

स्नेह–छाया को अमिट रखना चाहती है। वह प्रणव के मित्र डाक्टर वाटरमैन के प्रेम–प्रस्ताव को ठुकरा कर कहती है, ''मैं अपने पति के साथ बहुत सुखी हूँ। किसी दूसरे पुरुष का ध्यान भी मैं पाप समझती हूँ।''[29] वह पति के देर से आने पर आपत्ति करती है, ''अब आप बहुत देर–देर तक बाहर रहने लगे हैं। मुझे अच्छा नहीं लगता।'' पति के कटे–कटे रहने पर वह कारण पूछती है। प्रणव अनु की इस बात का प्रत्युत्तर देता है ''छोड़ दो मुझे'' अनु ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया ''ऐसी बात कभी फिर मत कीजिएगा। हंसी में भी नहीं। मैं जहर खाकर मर जाऊँगी।''[30] सखी ज्योत्सना से प्रणव का अन्य युवतियों के साथ सम्बन्ध के रहस्योद्घाटन होने पर अनु की मानसिक स्थिति विचलित हो जाती है। उसे पति छिन जाने का त्रास होता है। वह हताशावश असामान्य हो जाती है और विक्षिप्त सी सम्पूर्ण घर में तोड़–फोड़ करती है ''.....उसका दिल धड़कता है और .....रात का हर पल शरीर से रिसते हुए एक–एक कतरा खून की तरह लगता है।'' अनु का आत्म–पीड़क व्यक्तित्व पति परिणय–विच्छेदन पर लोंजाइन्स के उदात्त–तत्व की भांति स्व उदात्तीकृत कर समाज के समक्ष एक भारतीय आदर्श नारी का रूप प्रस्तुत करता है।

'परछाइयों के पीछे' की सुमित्रा के व्यक्तित्व में अन्तर्मुखी संश्लिष्ट भावना दिखाई पड़ती है। सुमित्रा अपने पति महीपाल द्वारा कई बार पीटी जा चुकी थी। गाली–गलोच तो रोजमर्रा की वस्तुओं में स्थान ले चुकी थीं। महीपाल का व्यक्तित्व दुर्बल मनोवृत्तियों के कारण विचित्र है। वह सुमित्रा से दोनों पुत्रियाँ छीनकर गर्भावस्था में उसे घर से निष्कासित कर देता है। सुमित्रा प्रसूति के पश्चात, नौकरी

कर, अपने पुत्र बिट्टू की परवरिश करती है। सुमित्रा आत्मपीड़क स्वभाव की नारी है। वह पत्नीत्व की विफलता को मातृत्व स्नेहिलछाया में सहलाना चाहती है। वह यह मानने लगती है कि जो सुख देता है, वह दुख भी दे सकता है, जो स्नेह से सींचता है, वह क्रूर बन गाली देकर पीट भी सकता है। सुमित्रा पति द्वारा दिए कष्टों को यह सोचकर अनदेखा कर देती है कि ''राम के काल से यही रीति चली आई है कि पुरुष किसी न किसी ओर से नारी को त्रास दे।''**31**

'अमलतास' उपन्यास की कामदा रतिबाला भी है और तापस–कन्या भी है। पति द्वारा उपेक्षित कामदा पति–आगमन पर कहती है ''जानते हैं आप! नारी अपनी मधुयामिनी की रात, किसी भी कीमत पर काली नहीं करना चाहती। मधुयामिनी की असफलता नारी की मृत्यु। दूसरी स्थिति में भटकी हुई नारी खुँखार शेरनी बन जाती है।''**32** प्रायः नारियों का स्वभाव ही आत्मपीड़क होता है। इसका एक मनोवैज्ञानिक कारण भी है कि नारी परसुख में ही स्वसुखानुभूति पाती है। इसी प्रवृत्ति के कारण कामदा अपना सर्वस्व पति को समर्पित कर देती है। वह अपने जीवन को पति–स्वभावानुसार परिवर्तित करना चाहती है, किन्तु हरदेव लाल अहम्वादी प्रवृत्ति का है, वह अपने अहंकार को संतुष्टि हेतु कामदा को निष्कासित कर देता है। परित्यक्ता कामदा सामाजिक कार्यों में अपनी कुंठा को तृप्त करती है। अहम्वादी हरदेव लाल आत्मग्लानि से कुंठित हो, रुग्णावस्था में पहुँचता है। मरणासन्न पति को कामदा अपनी अथक परिचर्या से पुनर्जीवन प्रदान करती है। कामदा कर्त्तव्य और पतिपरायणता इन दोनों दायित्वों के प्रति सजग तथा ईमानदार बनी रहती है।

'सीढ़ियाँ' की नायिका शारदा बुद्धिवादी है। उसमें विचारों की प्रधानता है। उसके विचार आत्मनिष्ठ हैं। वह अन्तर्मुखी चिन्तनशील नारी है। वह पत्नीत्व के सनातन कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठा रखती है। वह अपने पति सुकेत के विकल और हतप्रभ जीवन को स्नेह–सिंचित कर देती है। जिस प्रकार समुद्र वर्षा करके नदियों पर साम्राज्य स्थापित करता है। उसी प्रकार शारदा भी धैर्य रूपी वर्षा से पति स्नेह की रानी बनती है। शारदा अपने पति के, डॉ0 मनीषा से, विवाह पूर्व प्रेम–प्रसंगों से परिचित होते हुए भी, अनभिज्ञ सी रहती है। उसमें नारी सुलभ ईर्ष्या का नितान्त अभाव है। शारदा ने बड़ी चतुराई से मनीषा के कंटक को निकालकर कोसों दूर फेंक दिया। सुकेत भी पत्नी के प्रेम–पाश में बँधकर डॉ0 मनीषा से कहता है ''शारदा हमारे घर में आयी है, उसकी अपनी भावनाएं अपने विचार हैं। कुछ पूछती है तो बता दो आखिर हिसाब–किताब तो तुम्हारे पास होगा ही, हो सकता है कुछ तुम्हारा ही लेना देना निकल जाए।''[33] सुकेत अहम् प्रधान प्रवृत्ति का नायक है। उसके दाम्पत्य–जीवन में समझौते और समर्पण के साथ एक निष्ठता है। शारदा बुद्धिवादी है इसीलिए उसके निर्णयों में दूर दर्शिता है।

'वंशज' की सविता के मानसिक जगत के केन्द्र में प्रेम, काम दोनों का अत्यन्त शक्तिशाली स्थान है। पत्नी सुलभ समस्त गुणों में प्रणयानुभूति सविता का स्वभावज गुण है। नारी अपने पत्नी रूप में सौंदर्यशीलता और आदर्श की प्रतिमूर्ति है। ''पति–भाव का मूल भाव रति है।.....प्रणयानुभूति नारी का स्वभावज गुण है। यद्यपि प्रेयसी में ही इस गुण की प्रधानता होती है, किन्तु पत्नी में भी इसका समावेश अपेक्षित है। अन्तर केवल इतना है। प्रेयसी में प्रणयानुभूति का स्वच्छद रूप

प्रधान होता है किन्तु पत्नी में संस्कारबद्ध, संयमित, लज्जायुक्त प्रेमानुभूति अन्तर्निहित रहती है।''[34] सविता विवाह–पूर्व सुधीर की भावी पति के रूप में कल्पना करती है। उसकी कल्पना यथार्थ का लिबास ओढ़ती है। ''सविता से उसकी अगली मुलाकात शयनकक्ष की दीवारों से घिरे प्रणयी–एकान्त में हुई। .....अपने सख्त और सबल हाथों में लेकर सुधीर ने सविता के हाथ दबा दिये, तो उसकी कोमल अंगुलियाँ ही नहीं, पूरी देह पारे–सी काँप कर रह गई। चिन्तन और चेष्टा से परे, सविता ने आँखे मूँद अपने शरीर को ढ़ीला छोड़ दिया।''[35] सविता का अहम् भाव इतना शक्तिशाली है कि वह सुधीर के प्रति लैंगिक दृष्टि से अनुरक्त रहकर भी किसी दूसरी नारी की छाया भी पति पर नहीं पड़ने देना चाहती। प्रसूतावस्था में वह सुधीर से अलग कमरे में जरूर सो रही है, पर इतनी गहरी नींद नहीं, कि उसके आने, दरवाजा खुलने और विमला के वापस कमरे में लौटने की जानकारी न हो। उसमें नारी सुलभ ईर्ष्या की प्रचुरता है। उसमें अन्तर्मुखी चिन्तन–प्रवृत्ति है। शायद इसीलिए सुधीर कुंठित हो रुग्णावस्था में पहुँचता है, किन्तु सविता पत्नीत्व के सनातन कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनी रहती है। ''विवाह का पहला साल पूरा होते–होते सविता की पहली सन्तान भी हो गई.....पहला बच्चा लड़का होता तो अच्छडा रहता। डैडी को एक वारिस मिल जाता। सुधीर के दिवास्वप्नों से उसकी सम्पत्ति की रक्षा करना काफी नहीं है, एक उचित उत्तराधिकारी भी चाहिए।''[36]

'गैंडा' की राज के चरित्र में संतुलन का अभाव है। दम्भी एवं अहम् प्रधान व्यक्तित्व के कारण सुपर्णा के जीवन में समझौते और समर्पण का अभाव है।

विलासी जीवन की आकांक्षिणी राज के लिये वर्तमान ही सर्वस्व है। भविष्य की भयंकरता की कल्पना में वह वर्तमान को नरक नहीं बनाना चाहती। वह अपने पति को अपनी जूती–बराबर समझती है। ''बदसूरत पति की पत्नी होने में जो सुख है, वह तू कभी समझ ही नहीं सकती। कोई भी फरमाइश मुँह से निकलते ही पूरी। मेरे गैंडे का चमड़ा भी निखालिस गैंडे का है.....।''[37] राज के जीवन का उद्देश्य भौतिकवादी है। वह अपनी भौतिकवादी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मित्रता करने में कुशल है। वह महत्वाकांक्षी, रूपवान, विलासी, लैंगिक योग के प्रति निष्ठा की ललक लिए है। वह बुद्धि के स्थान पर भावना को प्राथमिकता देती है। इसलिए भौतिक सुखोपलब्धि एवं रति–क्रिया उसके जीवन का संकल्प है। राज न केवल अपने पति का ही अपमान करती है अपितु वह अपनी सखी सुपर्णा के पति रोहिताश्वदत्ता को अपने गिरगिटी कलेवर की बहुरूपिया प्रवंचना में फांस लेती है। उसका वासना–विह्वल मन शारीरिक सुखोपभोग में तल्लीन हो जाता है। राज के चरित्र में असंतुलन है। वह अतिशय विलासी और महत्वाकांक्षिणी होने के कारण वर्तमान की उपलब्धियों को मनोनुकूल स्वीकारने में असमर्थ है। उसके जीवन का उद्देश्य अस्पष्ट है। वह आन्तरिक संश्लिष्टता की रक्षा करने में जूझती रहती है। उसके व्यक्तित्व का स्वभाविक विकास अवरुद्ध हो गया है। इसीलिए उसका व्यवहार असामान्य सा हो गया है।

पंजाबी उपन्यासों में भी महिला रचनाकारों ने अभ्यन्तर संश्लिष्ट नारी चरित्रों की प्रखर अभिव्यक्ति की है। अमृता प्रीतम के उपन्यास 'पिंजर' की पूरो पंजाबी–कथा नायिकाओं की कोटि की एक सबल कड़ी है। जिसका निर्माण उसके

भोग में नहीं अपितु अमांसल, अमूर्त, नैतिकतावादी मान्यताओं के मध्य हुआ है। पूरो नव यौवना युवती है। उसने एक युवती की भांति ही अपनी आँखों में विवाह के सपने सजाए हैं, किन्तु विवाह–पूर्व ही रसीद द्वारा अपहरण के कारण वह एक बेजान मूर्ति बन गई। पूरो का रसीद के साथ निकाह हो जाता है। वह पूरो से हमीदा बन गई। पूरो आत्मपीड़क नारी है। पूरो के जीवन की यह विकलता विकेन्द्रित होकर उसके पूरे जीवन में व्याप्त हो गई। इस विकेन्द्रीकरण का एक मनोवैज्ञानिक कारण है। ''मानसिक अन्तर्द्वन्द्व के परिणाम–स्वरूप दमन की प्रक्रिया होती है।''[38] इसी दमनात्मक प्रक्रिया स्वरूप पूरो ने 'अल्प आहार' लेना प्रारम्भ कर दिया। वह पूरे दिन में मात्र एक रोटी नमक के साथ खाती। उसकी फूल सी कोमल देह मुरझा गई। लैंगिक दृष्टि से अभुक्ति के कारण पूरो में पूजा–भक्ति, वैराग्य, मोह–भंग आदि संवेग पूर्णतः परिलक्षित होते हैं। वह श्रमिकों के बच्चों को मक्खन एवं मट्ठा देती है। पूरो की दमनात्मक वृत्ति का उदात्तीकरण अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। रसीद की रुग्णावस्था पूरो की सम्पूर्ण विरक्ति को अपनी ओर आकर्षित करती है वह रसीद की सेवा करती है। रसीद का सामीप्य पूरो की घृणा की दीवार को जर्जर कर देता है। साधारणतया ऐसा प्रतीत होता है कि पूरो दया–प्रदर्शन के लिए तथा रसीद की दयनीय रुग्णावस्था से प्रभावित होकर उसकी सुरक्षा का संकल्प लेती है। अपहरण से विवाह–सम्बन्ध की विफलता के कारण, उसका अचेतन नारीत्व का विरोध करता है। रसीद की सहृदयता उसका हृदय परिवर्तित कर देती है। वह नारीत्व की चरम परिणति मातृत्व में मानती है। स्त्री की सार्थकता मातृत्व में है। वह जावेद की माँ बन गौरव अनुभव करती है। वह जावेद के साथ एक पगली के पुत्र को भी स्तन–पान करवा अपनी कुंठा और हताशा की ग्रन्थि को सुलझाती है।

'जेबकतरे' उपन्यास नायक प्रधान है। इसलिए उसमें रिक्की के चरित्र–विकास की सम्भावनाएं अकिंचन बन गई हैं। जेबकतरे का कपिल अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का नायक है। वह हीनता और कुंठाग्रस्त है। उसके माता–पिता का दाम्पत्य–जीवन असफल है। माता–पिता के तलाक का दुष्परिणाम कपिल की मानसिकता को अवरुद्ध कर देता है। कपिल का आत्मपीड़क व्यक्तित्व मानसिक विफलता का परिणाम है। रिक्की लैगिंक आभुक्तिवश कपिल से प्रणय लीला रचाती तो है लेकिन पितृ–अनुशासन समक्ष हताश हो जाती है। वह शिक्षित और भौतिकवादी नारी है। रिक्की का परिणय उसकी इच्छाविरुद्ध होता है। अन्ततोगत्वा वह यौन–ग्रन्थि से त्रसित दिखाई देती है।

'आल्हणा' की जमना का यौवन नायक की भावुकता से संचालित होता है। वह जीवन नामक युवक की बाह्य प्रेमाभिव्यक्ति पर विश्वास करती है। अर्पण और उत्सर्ग की आकुलता उसकी परीक्षा नहीं लेती। उसके परीक्षण रहित प्रेम का परिणाम परिणय में फलित होता है। जमना और जीवन दोनों परिणय–सूत्र में आबद्ध हो जाते हैं। अपने दाम्पत्य–जीवन से प्रसन्नचित जमना अभी खुशी की दहलीज पार करती है कि पिता के देहावसान पश्चात गाँव वालों ने उनसे सम्बन्ध–विच्छेद कर लिया। उनके खेतों में जानवर छोड़कर उनकी फसलें नष्ट कर दीं। उसका पति जीवन फौज में भर्ती हो जाता है। जमना आत्मपीड़क लोक में विचरने वाली चिर सुहागिन है। आत्मपीड़ा द्वारा वह अपनी लैंगिक इच्छाओं की पूर्ति करने में असमर्थ है। उसकी लैंगिक इच्छाएं मौन रह जाती हैं। वह पति की विरहावस्था सहने में असमर्थ है। संश्लिष्ट–पात्र के रूप में उसका व्यक्तित्व दुर्बल है। वह

विरह–पीड़ा से रुग्णावस्था में पहुँचती है। पारिवारिक जीवन का एकान्त, पिता के देहान्त और पति के प्रवास से उत्पन्न नीरवता, उसके भीतर की कोमलता को आहत करती है। इन समस्त जीवन–रोधी परिस्थितियों से घिरी जमना ने जीवन की लालसा त्याग दी। उसने एक हारे हुए जुआरी की भाँति मृत्यु की तरफ करवट ली और प्रोषित–पतिका जमना के प्राण पंखेरू उड़ गए।

'एकता' की प्रिया विवाह–पूर्व प्रणय–प्रसंग में विफल नारी है। वह अपनी कुंठा का उदात्तीकरण करती है। प्रिया के पति वकील हैं। वह उनकी पुत्री विक्की पर अपना सम्पूर्ण मातृत्व उड़ेलती है। वह नारी की चरम परिणति मातृत्व में मानती है। इसलिए वह अपनी विपुत्री एकता को मातृत्व–सागर में डूबकी लगवाती है। उसके पति भी प्रिया से अत्यधिक प्रसन्न हैं। वह उसको छेड़ते हैं, कि विक्की तो तुम्हारी असली बेटी है और मैं तुम्हारा सौतेला पति हूँ। एकता अपनी भाव–सत्ता को विकसित कर पुत्री पर विकेन्द्रित करती है। प्रिया के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को नियंत्रित करने वाला सूत्र है विवाह पूर्व असफल प्रेम–सम्बन्ध। प्रिया का यह विघटित प्रेम उसके सम्पूर्ण जीवन को नियंत्रित करता है। वह अटूट प्रयास से वर्तमान जीवन के आलोक में विगत जीवन की कुंठाओं को झुठला देती है।

'एरियल' की ऐनी आत्मपीड़क स्वभाव की नारी है। वह अनवर की प्रणय–लीलावश माता–पिता के गृह से एक रात्रि पलायन कर अनवर के पास चली जाती है। अन्ततः उसके माता–पिता दोनों को दाम्पत्य–जीवन में बाँध देते हैं। दोनों अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट होते हैं कि अकस्मात् लिज अनवर के जीवन में प्रवेश करती है। लिज के आकर्षण में आबद्ध हो अनवर ऐनी का परित्याग कर देता

है। ऐनी जटिल स्वभाव की नारी है। वह महत्वांकाक्षिणी है। लैंगिक असंतुष्टि के कारण उसमें स्वावलम्बन की भावना उदित होती है। उसमें भावना की जगह बुद्धि–प्रबलता है। ''वह शाल पेंट कर क्लब में उसकी प्रदर्शनी लगवाती है। अन्त में अनवर को उसे पतिव्रता–समझ झुकना पड़ता है।''[39] ऐनी पत्नीत्व के सनातन कर्त्तव्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित है। वह पति की रुग्णावस्था की सूचना पाते ही उसके पास जाती है। वह पति के अतृप्त और हतप्रभ जीवन को स्नेह–सिंचित कर उसमें पौरुष भरने का अथक प्रयास करती है। वह कुंठाग्रस्त अनवर की ग्रन्थि–निवारण हेतु अपने सतीत्व को भी नीलाम करने के लिए तत्पर है, परन्तु कुंठित और दुर्बल अनवर इस पर सहमत नहीं होता। वह ऐनी को आदेश देता है कि वह भारत छोड़कर लंदन चली जाए। ऐनी पति की कुंठा–निवृत्ति हेतु लंदन चली जाती है। ऐनी आन्तरिक संश्लिष्टता की रक्षा के लिए पति के आदेश को सहर्ष स्वीकार कर लेती है।

'दूसरी–मंजिल' की मुक्ता आत्म–पीड़क नारी है। विपन्नतावश वह विधुर दिलीपराय की परिणीता बनती है। ''हमारे समाज में पत्नीत्व के प्रांगण में पाँव रखते ही नारी के कर्त्तव्यों की कतार सी खड़ी मिलती है।''[40] मुक्ता का मन मौलिक गुणों से सम्पन्न है। उसका मन सदैव किसी न किसी उदात्त भव्य एवं महत्वपूर्ण तत्व की खोज में प्रयत्नशील रहता है। जो जीवन को सफल बनाता है। उसने स्वयं को स्वतंत्र रूप में निर्मित किया। उसने अचेतन में चल रहे संघर्षों और दिलीपराय की प्रथम पत्नी के त्रास को समूल नष्ट कर, दूसरी मंजिल अपनाई। पति का निश्छल स्नेह पाकर मुक्ता का वासना– विह्वल मन शारीरिक सुखोपभोग में तल्लीन होकर दूसरी मंजिल का सुनहरा सफर तय करता है।

2. आत्म-विभाजित (नारी चरित्र):

''राजनीतिक आन्दोलनों के उतार का युग एक ओर विश्व के लिए संकट का काल है। जिसमें विश्वयुद्ध की सम्भावना बढ़ती जाती है। दूसरी ओर भारत की स्वतंत्रता का युग भी है, जिसमें भारत के विभिन्न वर्गों में एक चेतना की लहर फैली थी। इस काल खण्ड में इसके बाद के वर्षों में भारतीय समाज का विकास अत्यन्त वितुलित ढ़ंग से हुआ है, ''इसलिए इस क्षेत्र में सबसे अधिक क्षति उन मध्यवर्गीय चरित्रों की हुई है जो वितुलन के शिकार हुए है।''[41] आत्मविभाजित चरित्र में सामाजिक, पारिवारिक सामंजस्य की प्रवृत्ति का अभाव होता है। ऐसे चरित्र अहंवादी होते हैं। ये द्वन्द्वात्मक स्थिति में भी अपने निजत्व को बनाए रखते हैं। ये अहंवादी होने के कारण जीवन–मूल्यों को तुच्छ मानते हैं। ऐसे चरित्र दोहरे व्यक्तित्व के होते हैं। ये अन्तर्विरोध उनके शील को खण्डित करते हैं।

'एक इंच मुस्कान' की अमला का व्यक्तित्व अहम् प्रधान है। वह परिणीता भी है, परित्यक्ता भी। उसका अहम्वादी–व्यक्तित्व परित्यक्ता होने के कारण, प्रतिशोध–संवेग की प्रबलता का शिकार है। वह सम्पूर्ण पुरुष वर्ग से प्रतिशोध लेना चाहती है। इसके लिए वह पुरुषों से आत्मीयता प्रकट कर उन्हें जीवन में आमंत्रण देती है। पुरुष वर्ग को लालसा की ज्वाला से प्रज्जवलित कर उसे संत्रास देने में उसके प्रतिशोधी–व्यवहार को संतुष्टि प्राप्त होती है। पुरुष के प्रति उसकी कुंठित प्रतिशोध–ग्रन्थि ऐसा करने पर विलीन होती है। इसमें वह सुखानुभूति पाती है। वह कैलास को आकर्षण–पाश में आबद्ध करती है और जब वह उसके समक्ष

विवाह–प्रस्ताव रखता है तब उसका पुरुष प्रतिकार–संवेग क्रियान्वित होता है और वह उसके विवाह–प्रस्ताव को ठुकरा देती है। वह उन्मुक्त सरिता सी बहना चाहती है कोई भी बन्धन उसे स्वीकार्य नहीं। वह नारी को अबला मानने की पक्षधर नहीं। नारी को वह सबला और चंडी मानती है। इसलिए उसे किसी पुरुष के अवलम्बन की आवश्यकता नहीं। ''वह सड़ना नहीं चाहती है सूखना नहीं चाहती, बहना चाहती है, निरन्तर बहना चाहती है, दूर–दूर निरुद्देश्य सी, लक्ष्यहीन सी पर निर्बन्ध और उन्मुक्त।''[42] वह अमर की प्रेयसी है। वह अमर की सृजक–शक्ति और प्रेरणा है। उसमें नारी सुलभ ईर्ष्या का आधिक्य है। वह रंजना को अमर के जीवन में प्रवेश करने से वंचित रखना चाहती है। वह अमर पर आसक्त तो है पर उससे न तो स्वयं विवाह करना चाहती है और न ही रंजना से उसका विवाह होने देना चाहती है। वह अमर के अन्तस में अपने प्रति एक चुम्बकीय आकर्षण उत्पन्न करती है। वह उसकी कलात्मक शक्ति को प्रोत्साहित कर उसे कला साधना की ओर प्रेरित करती है। अमर के उपन्यास की सम्पूर्णता पर उसकी आहत कुंठा को राहत मिलती है। ''इस उपहार में न वैभव का प्रदर्शन था। न अमला को प्रसन्न करने का प्रयत्न, किन्तु उसमें अमर की आत्मा का निचोड़ था, जिसे उसने कलम के माध्यम से बूँद–बूँद करके उन नीरस शुष्क कागज के पन्नों पर उड़ेल दिया था। अमला की आँखें भींग आयीं।''[43] इसके पश्चात भी वह अमर के प्रति समर्पित नहीं होना चाहती बल्कि उसे ही अपने अनुरूप बनाना चाहती है। किसी के अनुकूल स्वयं को परिवर्तित करना उसे असह्य है। इससे उसका अहम्वादी व्यक्तित्व आहत होता है।

इसलिए वह अमर को स्वीकारने में असमर्थ है। उसका जीवन अस्थिर और अविश्वास से ओत–प्रोत है। पुरुषों को पराजित करके, उसकी महत्वाकांक्षा पराकाष्ठा पर पहुँचती है। जीवन की सीमाओं का अतिक्रमण करना, स्वच्छंदता और उन्मुक्तता उसका स्वभाव बन गया है। ''.....आजकल अपने जीवन में पुरुष का अभाव मैं महसूस करती हूँ। .....एक ऐसा पुरुष जो हवशियों की तरह मुझे प्यार करे .....सब चीजों से अलग करके मुझसे प्यार करे, केवल मुझे मेरे इस शरीर को आत्मा को।''**44** वह लैंगिक मुक्ति चाहती है '' मन करता है, कोई बाँहों में कस ले, इतना कस ले कि मेरी सारी नसें झनझाकर टूट जाए और बिखर कर चूर–चूर हो जाऊँ। किसी सोते पुरुष के होठों को इतना चूमूँ, इतना चूमूँ कि वह चौंक जाए और लाज से दुहरी होकर उसकी छाती में अपना सिर गड़ा दूँ।''**45** उसके अचेतन में पौरुषीय–रति के प्रति स्वाभाविक लगाव है। परन्तु उसका अहम् उसमें अवरोध उत्पन्न करता है। उसके इस अन्तर्विरोध ने उसकी अभ्यन्तर संश्लिष्टता को समाप्त कर दिया है। उसका व्यक्तित्व संश्लिष्टता के अभाव–वश खंडित हो गया है। इसे वह स्वयं स्वीकारती है, ''पति के घर से आने के कुछ समय बाद से ही एक बात मेरे मन में धीरे–धीरे घर करती गई थी, कि मुझे सब प्रकार की सीमाओं को तोड़ना है। पति और परिवार ही नारी का सबसे सशक्त बन्धन होता है। जब वही टूट गया तो, और किसी बन्धन में मैं अपने को क्यों बँधने दूँ?'' वह निर्बन्ध रहकर स्वच्छंद यौन–कुंठा की तृप्ति चाहती है। वह असफल और विभाजित व्यक्तित्व के कारण हताश हो आत्महत्या करती है।

'शेष यात्रा' की अनुका विभाजित व्यक्तित्व की नारी है। वह परिणीता भी है और परित्यक्ता भी है। वह प्रणव द्वारा परित्याग दिए जाने पर डॉ0 दीपांकर चौधरी से परिणय कर कहती है, ''और अब मैं तुम्हारी पत्नी हूँ।''

''एकदम मेरी, केवल मेरी।''

''हाँ दीपांकर एकदम तुम्हारी।''**46**

अनुका के व्यक्तित्त्व को नियंत्रित करने वाले दो कारक हैं– पहला परित्यक्ता और दूसरा सहानुभूति। वह अपनी वासनातिरेक–प्रवृत्ति की संतुष्टि हेतु पुनर्विवाह करती है। वह डॉ0 दीपांकर से विवाह कर लैंगिक तृप्ति चाहती है, किन्तु अपने खंडित व्यक्तित्व के कारण वह प्रणव की स्मृति को विस्मरण करने में असफल है। यद्यपि वह स्वयं को डाक्टरी व्यवसाय में लगाकर उसकी यादों से पूर्णतयः मुक्ति चाहती है। वह समर्पण और सहानुभूति से दीपांकर को अपने अनुकूल बनाने के लिए प्रयासरत रहती है। वह स्वयं के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए अपने को डाक्टरी में व्यस्त रखने को उद्यत भी है किन्तु अस्वस्थ प्रणव को पाकर वह खंडित हो जाती है। उसके व्यक्तित्व का विभाजन हो जाता है। अस्वस्थ प्रणव का आगमन उसके जीवन में तूफान ले आता है। उसकी जिन्दगी के रेशों में उथल–पुथल हो जाती है। वह चाह कर भी इस उठा–पटक के खेल में, अपने को विलग नहीं कर पाती। वह अपने विभाजित व्यक्तित्व को समेटने का प्रयत्न तो करती है किन्तु उसे विफलता ही प्राप्त होती है।

'मेरा नरक अपना है' की शीला वासनातिरेक के कारण खण्डित नारी है। उसकी लैंगिक–तीक्ष्णता, परिस्थितियों के प्रति आवेग युक्त प्रतिक्रिया है। शीला

''पहली रात के बाद पति के सहवास को उतना नहीं जी सकी, क्यों? यह वह भी नहीं जान पायी।.....अपने को ऊँचा दर्शाने की प्रक्रिया में .....खूब आस्वादन लिया हीरेन के उत्पीड़न का।''[47] वह पति के प्रति कठोर और निर्मम है। वह भौतिकता को जीवन का चरम सुख मानती है। पति को भीरु और दुर्बल समझ वह सुमित के साथ संलापों में निरत रहती है। वह अपने इस स्वच्छन्द आचरण से पति को संत्रासित करती है। वह रति–क्रिया कलापों से लैंगिक भुक्ति पाने का अथक प्रयास करती है। वह अपनी आन्तरिक जड़ता की प्यास स्वच्छन्द आचरण से मिटाना चाहती है। उसका व्यक्तित्व विभाजित है। पति हीरेन और सुमित इन दोनों की परिस्थितियों में, वह पिसती रही। पति को संत्रासित करने के आस्वादन में, वह स्वयं संत्रासित होती गई। ऐसी परिस्थितियां उसे रौंदती गईं और ऐसे ही क्षणों में, वह किसी एक को वरण करने की यंत्रणा में पिसती रही। यह यंत्रणा उसके व्यक्तित्व की सत्ता को तार–तार कर खंडित करती है।

'एक तिकोना दायरा' की एवलिन आत्मविभाजित नारी है। इसका प्रमुख कारण उसका रोग–ग्रस्त होना है। दूसरा कारण एवलिन की रुग्णावस्था के प्रति पति की उदारता है। वह पति की स्वतंत्रता का दुरुपयोग करती है। वह पति के साथ विश्वासघात कर जर्मन फ्रैंक में आत्मतृप्ति खोजती है। एवलिन रोग से ऊब चुकी है। वह इस ऊब के प्रति सचेत भी है। उसकी यह ऊब और भी घनीभूत होती जाती है। वह अपने पति को धोखा देकर, प्रेमी के पास पेरिस जाती है। वह फ्रैंक से रास–लीला कर वापस लौटती है। एवलिन में आत्म–पीड़क रूप की प्रबलता है। वह आत्म–पीड़ा का विलयीकरण चाहती है। शायद इसलिए वह परपुरुष का संसर्ग

तलाशती है। इसके लिए उसका अचेतन उसे कुंठित कर, अवैध भी ठहराता है। ''एक व्यक्ति के बारे में सोचकर दूसरे व्यक्ति को समर्पण करना घातक पापों में से एक है और निर्मम यातना उनका दंड है।''[48] शायद इसी पश्चात्ताप का दंड वह ह्रदय से चाहती है। एवलिन पेरिस से लौट रही थी कि विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने पर उसकी मृत्यु हो जाती है। इस केन्द्रीय परिस्थिति के भीतर एक ऐसी जड़ता है जिसका भोग एवलिन करती है। स्पष्ट है कि वह अपने अभिशप्त जीवन की छाया पति पर नहीं पड़ने देना चाहती वह अपने ऊब–भरे वातावरण में अन्यत्र (प्रेमी फ्रैंक) को सहभोक्ता बनाना चाहती है। किन्तु भारतीय आदर्श को वह नकारने में असफल है, इसलिए वह स्वयं को दोषी स्वीकारती है।

पंजाबी उपन्यासों में भी उपन्यास लेखिकाओं ने आत्मविभाजित नारी–पात्रों की अभिव्यक्ति की है। 'डाक्टर देव' की ममता विवाह के पूर्व की रागबद्धता से मुक्त नहीं हो पाती। प्रेम के कारण वह एक प्रकार से पाप–बोध से भी त्रस्त है। वह अपने पति जगदीश के समक्ष अपने अतीत के पृष्ठों को खोलकर रख देती है। ममता गुणों एवं सद्विचारों की प्रतिमूर्ति है। उसके इस व्यक्तित्व से जगदीश प्रभावित है। वह ममता पर अत्यधिक स्नेह–वर्षा करना चाहता है। लेकिन ममता में अथाह वेदना और विवशता है। उसमें समाज और भाग्य के प्रति अप्रत्यक्ष विरोध है। समाज के क्रूर हाथ प्रेमी देव से उसे विलग कर देते हैं। वह पति जगदीश की आर्थिक सहायता को अस्वीकार कर, वहाँ से दूर चली जाती है। वह टूटते अहम् की रक्षा के लिए स्वाभिमान का सहारा लेती है। प्रबुद्ध व्यक्तित्व को शून्य करना कठिन है। यही तो द्वन्द्व का कारण है। वह अपने जीवन का सम्पूर्ण राग प्रेमी देवराज को

समर्पित कर चुकी है। वह रिक्त हृदय से पति जगदीश को कैसे स्वीकार करे। इस जटिल संघर्ष से मुक्ति हेतु वह एक नया मार्ग बनाती है। वह स्वावलम्बी बन, परमार्थ की ओर बढ़ना चाहती है। प्रेम–पंथ की कठिनाइयाँ द्वन्द्व पैदा करती हैं। इस द्वन्द्व की स्थिति में पड़े व्यक्ति के अहम् को अपनी सुरक्षा के लिए एक विशेष प्रकार का व्यवहार–क्रम निश्चित करना पड़ता है। ममता ने भी इसी विशेष प्रकार के व्यवहार क्रम को अपनाया। विशुद्ध प्रेम में छल, द्वेष और हिंसा जैसी भावनाओं का कोई स्थान नहीं होता। ममता का हृदय भी विशाल और विशुद्ध है। वह जगदीश के पर्वत से गिर जाने पर अट्ठाह वर्षों–पश्चात पति के आमंत्रण–पत्र पर अहं का उत्सर्ग कर, उसके पास आकर, उसकी सेवा–सुश्रूषा कर, अपने कर्त्तव्य की पूर्ति करती है। 'डाक्टर देव' की राजकुमारी आधुनिक किन्तु परम्परावादिनी है। वह डाक्टर देव से प्रेम करती है लेकिन प्रेम के लिए वह शालीनता का त्याग करना नहीं चाहती। उसके प्रेम पर भारतीयता की शालीन छाया है। वह डाक्टर देवराज के प्रति निश्छल आत्म–समर्पण को स्वीकारती है। वह देवराज की आज्ञा से डॉ0 सोमनाथ से विवाह करके अपने को धन्य मानती है। डॉ0 देवराज की सद्भावना एवं विलक्षण प्रतिभा के प्रति वह समर्पित है। इसीलिए वह डॉ0 सोमनाथ से परिणय करती है। परिणय की इस पावन–बेला में राजकुमारी विचित्र मनोविकारों के आरोह–अवरोह में डूबती–उतरती है।

'आल्हणा' की नीना का व्यक्तित्व आत्मविभाजित है। उसके चरित्र को लेखिका द्वारा निर्मित परिवेश से ही रेखांकित करने की चेष्टा की गई है। विपन्नता में पली अनाथ नीना यौवन के प्रथम–पहर में तेज की ओर आकर्षित हो जाती है।

किन्तु जैसे ही उसे वास्तविकता ज्ञात होती है कि तेज से उसकी आश्रयदात्री राजवन्ती की पुत्री वीणा प्रेम करती है। यह रहस्योद्घाटित होते ही नीना अपने प्रणय का उत्सर्ग कर, उदण्ड जगन से विवाह कर लेती है। तांकि वीणा तेज से परिणय कर सके। जगन को नीना अपने पूर्वराग के विषय में सब कुछ कह देती है। जगन नीना से प्रेम के लिए नहीं, पीड़ा पहुँचाने के लिए विवाह करता है। वह उसको मारता, पीटता और अत्यधिक प्रताड़ित करता है। नीना का तन और मन निष्ठुर पति से पीड़ा पाता है। वह निरन्तर दमन से अपना मानसिक सन्तुलन खोने लगती है। वह मायके चली जाती है। उसे स्वप्न में भी जगन द्वारा दी गई प्रताड़नाएं पीड़ा पहुँचती हैं। चेतना पर अधिक बल पड़ने के कारण उसकी गति अनियंत्रित हो जाती है। अंततः वह मृत्यु को वरण करती है।

'एकता' की एकता के मानसिक जीवन की अवस्थाओं के चित्रण में हम फ्रायड द्वारा प्रतिपादित रागात्मकता (लिबिडो) की झलक पाते हैं। कालेज के दिनों में रघु पर आसक्त एकता, अपने प्रणय को दाम्पत्य–जीवन में परिवर्तित करती है। लेकिन एकता को रघु वालिया के दोहरे एवं कुंठित व्यक्तित्व का तनिक भी आभास नहीं था। रघु वालिया काम–विकृति से मुक्त नहीं हो पाता है। वह विरोध और निषिद्ध के रोमांचकारी रस का रसिक है। कुंठित होने के कारण वह प्रहार को ही सबसे अच्छी सुरक्षा–पद्धति मानता है। इसलिए रघु एकता पर अत्यधिक अत्याचार करता है। निरन्तर दस वर्षों की प्रताड़नाओं का प्रस्फुटन तलाक में होता है। एकता रघु से सम्बन्ध–विच्छेद कर लेती है। सामाजिक रूप से तो वह पति से विलग होकर, अपने भाई–भाभी के पास रहती है, किन्तु मानसिक रूप में रघु की

संचित–स्मृतियाँ उसके अचेतन में संघर्ष करती हैं। अहम् की सुरक्षा के लिए सम्पूर्तिकरण का प्रयत्न अनुकूल होता है। कभी–कभी वह अतीत के क्षणों में जब प्रतिगमन करती तब वह घर में पाली हुई मुर्गियों को देखती उनके अण्डे देने और बच्चे बनने तक की प्रक्रिया से अपनी लिबिडो की सम्पूर्ति करती। इस प्रक्रिया को देखकर ही उसे रागात्मक–संतुष्टि प्राप्त होती। वह शारीरिक रूप से नहीं अपितु मानसिक रूप से सदैव आत्मविभाजित रहती है। एकता को महसूस हुआ उसके मन में अंधेरा तो नहीं पर कुछ अन्धेरे जैसा जरूर है। एकता अपनी लिबिडो–ग्रन्थि की पूर्ति के लिए 'दोनों भतीजों के साथ हंसती–खेलती और रघु की याद में खो जाती।''[49] पति रघु को विस्मृत करने में असमर्थ एकता मानसिक तनाव के बोझ से बोझिल और खण्डित नारी है।

''दिल्ली दीआं गलियां'' की ऐलिस सुन्दर विदेशी नारी है। वह महत्वाकांक्षिणी है। उसके पास रूप है, विलासी वातावरण है तथा लैंगिक भोग के प्रति निष्ठावान ललक भी है। उसमें बुद्धि की जगह भावना सर्वोपरि है। इसलिए वह पति तनवीर को बचाने के लिए बदनामी अपने ऊपर ले लेती है। लेकिन इस मिथ्यारोप के बोझ से उसमें मानसिक तनाव बढ़ जाता है। इसी कुंठा के परिणामस्वरूप उसे कैंसर हो जाता है। उसकी आत्मा उसे कचोटती है। ऐलिस कामिनी को फोन पर अस्पताल में बुलाकर, सत्य–उद्घाटित कर कहती है कि ''मिस्टर लाल के कत्ल के विषय में दिए गए उनके बयान झूठ थे। अपने ऊपर इल्जाम मैंने स्वयं लिया था कामिनी, क्योंकि मिस्टर तनवीर को अगर किसी तरह बचाया जा सकता था, तो इस तरह ही।''[50]

वह कामिनी से कहती है ''.....बाहर से मैं हमेशा हंसती रही हूँ। सहन करती रही हूँ। लेकिन अन्दर से शायद मैं भी नहीं सहन कर सकी। दुनिया की कोई बदनामी नहीं थी, जो मैंने न सुनी हो, कई महीने हो गए सुनते, वही दर्द शायद कैंसर बन गया.....अब शायद पागलपन बन रहा है।''[51]

ऐलिस पाप–बोझ से स्वपीड़ित नारी है। आत्म–पीड़ा के द्वारा उसकी लैंगिक इच्छाएं मौन रह गईं हैं। उसका जीवन नियामक–नियमक तत्व केवल सुपर इगो है, जो उत्सर्ग प्रिय है। इसी उत्सर्ग के परिणामस्वरूप उसे बदनामी झेलनी पड़ती है। वह इस परिवेश से अपने को असंतुलित अनुभव करती है। परिवेश और समाज से उसका यह आन्तरिक वितुलन या तनाव उसे रोगग्रस्त बना देता है। अस्तु ऐलिस मानसिक और शारीरिक रूप से आत्म–विभाजित व्यक्तित्व की पात्र बन कर रह जाती है।

3- आत्म निर्वासित (नारी चरित्र) :

भारतीय जीवन–सन्दर्भ में आत्म–निर्वाचनएक जटिल समस्या है। आत्म–निर्वासन की समस्या अधिकांशतः शहरी मध्यम वर्ग की है। उनके भीतर कार्य–व्यापारों की आत्मीय परिस्थितियाँ निर्बल होती हैं। उनके पीछे कोई आत्मीय–भावना नहीं होती। ऐसी स्थिति में व्यक्ति पहले समाज से और फिर अपने आप से निर्वासित हुआ अनुभव करता है। इन परिस्थितियों में पृथकता, दो रूपों में दिखाई पड़ती है। प्रथम सामाजिक–निर्वासन और द्वितीय आत्म–निर्वासन है। इन दोनों ही रूपों में व्यक्ति का स्वयं का ही निर्वासन होता है। व्यक्ति समाज से विलग

होकर क्रमशः स्वयं से भी विलग हो जाता है। आत्म–निर्वासन की यह समस्या जटिल है और यह विविध प्रकार के विरोधों से उत्पन्न होती है। चूँकि इन विरोधों के भीतर भी आत्मविवेक सजग रहता है, इसलिए आत्मनिर्वासित कथा–चरित्रों का सामाजिक शील चाहे खण्डित हो जाए लेकिन इससे व्यक्ति के रूप में उसका महत्व लेश–मात्र भी कम नहीं होता।

'एक तिकोना दायरा' की एवलिन पत्नी और दो सन्तानों की माता भी है लेकिन वह अपने प्रेम के कारण ही निर्वासित है। वह अपने वैवाहिक जीवन से अतृप्त है। प्रेम आत्म–समर्पण का नाम है। इसे खरीदा नहीं जाता। प्रेम विरह में विदग्धता प्रदान करता है। एवलिन को भी अपने जर्मन प्रेमी फ्रैंक के चले जाने के पश्चात कुछ ऐसा ही अनुभव हुआ। ''वह प्रियतम की अनुपस्थिति में दिवा–स्वप्न देखती है और इन्हीं दिवा–स्वप्नों में वह प्रियतम से बातें करती पुलकित हो उठती है। क्षण भर में वास्तविकता ज्ञात होते विरह–व्यथा उसे सालने लगती।''[52] साहचर्य में पारस्परिक आकर्षण की वृद्धि होती है। प्रेमी और प्रेम–पात्र एक दूसरे के अत्यन्त सन्निकट आना चाहते हैं। ''इतना ही नहीं, एक दूसरे को सम्पूर्णतः आत्मसात करने की गहरी व्याकुलता उनमें उत्पन्न हो जाती है।''[53] एवलिन भी फैंक–साहचर्य में तुष्टि तो पाती है किन्तु अपराध–बोध से समाज से निर्वासित सी रहती है। वह पति से भी मानसिक रूप में निर्वासित रहती है। यही कारण है कि वह रुग्णावस्था को पहुँचती है। फ्रैंक से जर्मन में मिलने के पश्चात वह पाप–ग्रन्थि से खंडित होती प्रतीत होती है और विमान–दुर्घटना में मृत्यु का वरण करती है।

'चल खुसरो घर आपने' की उमा आर्थिक विपन्नतावश कुपथगामनी बनती है। एक दिन पुलिस के हथकंडे में पड़ने पर उसकी बहन कुमुद को निर्वासित उमा की गतिविधियों का अहसास होता है। यदि उमा के बचपन की ओर लौटते हैं तो हम पाते हैं कि शैशवकाल में उमा भीरु है। जब कभी उसकी माता जी सत्संग में देर से लौटती तब उमा भागकर उससे लिपट कर सो जाती थी–''थोड़ी जगह दो, दीदी उधर खिसको, हमें उस कमरे में अकेले डर लगता है।''[54] शैशवकालीन भीरु–प्रवृत्ति की उमा का व्यक्तित्व निर्वासित होकर खण्डित होने की ओर उन्मुख है लेकिन उसकी अग्रज कुमुद उसका परिणय कर, उसके निर्वासित व्यक्तित्व की दिशा परिवर्तित कर देती है।

पंजाबी उपन्यासों में आत्म–निर्वासित पात्रों की संख्या अल्प है। 'पीले पत्तेयां दी दास्तान' की उषा दाम्पत्य–जीवन की असफलता से कुंठित है। पी0सी0एस0 अफ़सर भगीरथ नाथ मलिक रागात्मक–वृत्ति का पुरुष है। वह रात्रि भर परस्त्रियों के संसर्ग में रहता है। उषा के व्यक्तित्व में अन्तर्मुखी भावना की प्रधानता है। इसलिए उसके स्वभाव में संवेगों, दया, ममता, क्षमा, करुणा आदि मानवीय गुणों की प्रधानता है। उसमें वाग्वैदग्धता, वाक्–प्रवीणता भी असीम है। इसी प्रवीणता के समक्ष उसके कठोर एवं नीरस हृदय पति देव को भी कभी–कभी हार स्वीकार करनी पड़ती है। उन्हें कहना पड़ता है, ''यह सब तुमने कहाँ से सीखा है।''[55] वह पति की उपेक्षा से मर्माहत है। वह अपने पारिवारिक और सामाजिक परिवेश से निकल कर, ऐसी जगह जाना चाहती है। जहाँ उसे पति के आलोचनात्मक शब्द भेदने में

असमर्थ हों। वह ऐसा प्रेम–व्यवहार चाहती है जो उसके बिखरते और नष्ट होते आत्मविश्वास को सबलता दे सके। अंततः वह हताशा, कुंठावश, समाज से ही निर्वासित नहीं होती अपितु स्वयं से भी निर्वासित हो जाती है।

'ऐहु हमारा जीवणा' की भानो विपन्नतावश आत्म–निर्वासित होती है। भानो वैधव्य बोझ से पीड़ित है। उसके पिता भानो को एक वृद्ध को बेचना चाहते हैं। पिता की इस कुचाल का रहस्य–ज्ञात होते ही, वह गंगा में कूद कर आत्महत्या करने लगती है। नारायण उसे बचाकर अपनी पत्नी बनाता है। भानो अधेड़ उम्र के शराबी नारायण को अपना पति परमेश्वर मानती है। गाँव का एक युवक उजागर उससे अश्लीलता करना चाहता है। तब वह दरवाजा खुला छोड़कर विद्युत–गति से बाहर चली जाती है और अपनी अस्मिता को बचाती है। संस्कार और परिस्थिति की विवशता के बीच आत्म–विभाजित भानो के जीवन की समस्या केवल एक स्त्री की समस्या नहीं कहीं जा सकती। आज के सामाजिक सन्दर्भ में नारी के व्यक्तित्व की स्वतंत्रता भी एक जटिल समस्या है। भानो की बाह्य सहजता और आन्तरिक सजगता में कहीं न कहीं आत्मविरोध है जो उसे संकोचशील, परम्परानुरागी, सहज और भीरु बनाता है। उसने अपने पिता, दिवंगत पति सरवन और जीवन रक्षक शराबी पति नारायण आदि के सम्पर्क में आकर सम्बन्धों के नए–नए रूपों को देखा, सुना और परखा है। विशेषतः नारी जीवन–संदर्भ में तो यह सबसे बड़ी सच्चाई है कि नारी को अबला समझकर केवल पुरुष–वर्ग ने ही नहीं कुचला वरन पुरुष वर्ग के साथ–साथ नारी ने भी नारी को प्रताड़ित किया है। नारी की सबसे बड़ी शत्रु नारी ही है। भानो की सौत उसे शारीरिक और मानसिक रूप से अत्यधिक प्रताड़ित

करती है। इन संघर्षों के बीच भानो के व्यक्तित्व को भले ही विराटता नहीं मिली हो किन्तु प्रसार अवश्य ही मिला है। उसे सुख नहीं मिलता है। वह निरीह और पंगु बन जाती है। भानो सामाजिक अर्थ में साधारण नहीं रह जाती। वह तनाव के कारण असामान्य सी हो गई है। उसकी अवस्था शून्य सी हो गई है। भानो आत्म–निर्वासिता नारी है।

'सूरज ते समुन्दर' की सोना आत्म–निर्वासित नारी–पात्रों में से एक है। उसके जीवन की असहजता परिस्थितियों की विषमता की उपज है। पति की उपेक्षा, पति द्वारा सौत रखना और सन्त द्वारा किया गया बलात्कार, सोना के शील को खण्डित कर देता है। वह अपने में संतुलन नहीं बना पाती है और प्रायः विक्षिप्त सी हो जाती है।

4-3 मनोविश्लेषणपरक (नारी चरित्र) :

फ्रायड मनुष्य की मूल शक्ति लिबिडो (काम वृत्ति) को मानते हैं। यह लिबिडो बचपन से ही प्रत्येक व्यक्ति में होती है। यह अलग बात है कि किसी में यह वृत्ति अधिक होती है और किसी में कम। फ्रायड ने कहा है कि प्रेम, नैतिकता, सामाजिक रुचि आदि सभी उच्च आदर्श काम–वृत्ति (लिबिडो) के द्वारा ही उद्‌भूत होते हैं। प्रेम किसी भी बन्धन में बंध कर नहीं रह सकता। उन्होंने प्रेम के दो रूप माने हैं। एक वासना से मुक्त आदर्श रूप है और दूसरा प्रेम कुंठित और वासनात्मक रूप। मानसिक जगत में प्रेम और काम दोनों का अत्यन्त शक्तिशाली स्थान है। भारतीय–परम्परा में प्रेम की पवित्रता की रक्षा पर अधिक बल दिया गया है। लिबिडो जब दमित होती है तब उसकी प्रतिक्रिया होती है। यह प्रतिक्रिया जब सरल

मार्ग का अनुसरण करती है तब त्याग, दया, करुणा, सेवा, सहानुभूति आदि द्वारा अभिव्यक्त होती है। जब यह भयंकर मार्ग अपनाती है तब बिना भविष्य का विचार किए ही विध्वंस करने लगती है। ऐसी स्थिति में कुल–मर्यादा और लज्जा आदि के बन्धन क्षणिक लगते हैं।

'भैरवी' उपन्यास की रुक्मणी के जीवन का उद्‌देश्य भौतिकवादी है। वह महत्वाकांक्षिणी है। वह रूपवान है। विलासी वातावरण में बिगड़ी रुक्मणी पति गजानन की सम्पदा को दोनों हाथों से लुटा कर, कुंठित–राग को तुष्ट करती है। उसमें लैंगिक भोग के प्रति एक विचित्र ललक है। उसमें बुद्धि की जगह लिबिडो की सर्वोपरिता है। इसलिए भौतिक सुखोपलब्धि उसके जीवन का दृढ–संकल्प है। वह पति पर अनुशासन कर, अपने कुंठित अहम् को भोगती है। अतिशय विलासी और महत्वाकांक्षिणी होने के कारण वर्तमान की उपलब्धि को स्वीकारना उसका स्वभाव नहीं है। अहम् प्रधान व्यक्तित्व वाली रूकमणी का इड अत्यधिक शक्तिशाली और क्रियाशील है। इसलिए उसका स्वाभाविक–विकास अवरुद्ध सा हो गया है।

'कृष्णकली' की जया कान्वेंट शिक्षित और रूपवती है। उसमें रूप और अहम् की शक्ति है। पति दामोदर के वासनात्मक स्वभाव और उसके पर –नारी सम्पर्क की आदत से परिचित होकर भी, वह संयम बनाए रखती है। वह अपने परिवेश से अशान्त है। पति के अत्याचारपूर्ण आचरण के कारण, वह लिबिडो–ग्रन्थि से पीड़ित नारी है। जो उसके मन को क्रान्तिकारी बनाता है, जिसमें वह चिन्ता से उत्पन्न विकलता, कष्टकारिता, घबराहट आदि स्थितियों से मुक्ति पाने का प्रयत्न करती है। जया की स्थिति ऐसी है कि वह पति–प्रेम पाने में असफल है। अंततः वह कुंठित हो, जीवन की रिक्तता से ऊब कर पतिता बनती है।

'एक इंच मुस्कान' की रंजना लेखक अमर की पत्नी है। अमर एक संवेदनशील कला–प्रेमी है। उसकी मुलाकात अपने उपन्यासों की पाठिका अमला से होती है। अमला की सायास मुस्कान उसे सृजन की प्रेरणा देती है। अमर का दो नारियों के प्रति आकर्षण उसके व्यक्तित्व में अस्वाभाविक अस्थिरता ला देता है। वह वर्तमान के प्रति विचारशील और अतीत से मुक्त रहने का प्रयत्न करता है। रंजना ईर्ष्यालु नारी है। उसके स्वरूप में उसके अस्तित्व, व्यक्तित्व, शिक्षा, संस्कार, आचरण, आर्थिक स्थिति आदि पर उसकी वैचारिक स्वतंत्रता अत्यन्त सबल एवं सशक्त दिखाई देती है। वह पुरानी परम्परागत लकीर से हटकर यथार्थ की पगडण्डी की ओर अग्रसर होती है। उसे अमर के साथ अमला का यह, स्वच्छन्द–व्यवहार कदापि सहन नहीं है। रंजना को उसकी परिस्थितियों ने शंकालु और ईर्ष्यालु बना दिया है। वह ईर्ष्याग्नि में तिलतिल कर जलती है। अंततः वह पति से विलग हो जाती है।

'आपका बंटी' की शकुन को नियंत्रित करने वाले दो तत्व हैं–प्रतिशोध और अहम् भावना। परित्यक्ता होने के कारण वह पति अजय को पराजित कर प्रतिशोध लेना चाहती है। अजय को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा, उसमें वह स्वयं पराजित हो गई। शकुन की स्थिति ठीक ऐसी ही है, ''अजय के किसी के साथ सम्बन्ध बढ़ने की सूचना, फिर उसके साथ सैटल हो जाने की सूचना ने उसे कितना तिलमिला दिया था।.....सांस रोके, दम साधे, घुटी–घुटी और कृत्रिम!''[56]

अजय को नीचा दिखाने के लिए वह डॉ0 जोशी से परिणय करती है। वह ईर्ष्या, अहम्, दम्भ आदि के कारण अन्तर्द्वन्द्वों से जूझती है। प्रतिशोध तथा अहम् के कारण उसके जीवन में स्थिरता का अभाव है।

'तिन पहाड़' की जया की सगाई श्री से होती है किन्तु उसका पाणि–ग्रहण नहीं हो सका। इस त्रासदी से जया टूट जाती है। उसके अचेतन में प्रथम अनुराग श्री के प्रति है लेकिन अचेतन में दमित इच्छाओं की प्रेरणा से वह विवाहित तपन की ओर आकर्षित होती है। तपन से वह श्री के अभाव की पूर्ति चाहती है। ''लेटे–लेटे जाने कितनी बार वह प्रिय मुख आँखों के सामने घिर आया कितनी बार वे बाँहें इन बाँहों के पास, जैसे रागभरी गलबहियाँ हो.....।''[57] व्यक्ति प्रायः समाज के प्रचलित परम्परागत आदर्शों की उपेक्षा करता है। पुरुष और नारी समाज का मेरुदण्ड हैं। उसके टूटते ही समाज विघटित हो जाता है। मानव प्रगति भी अवरुद्ध हो जाती है। जया श्री से प्रतिशोधवश विवाहित तपन को कुंठा–पूर्ति का आलम्बन तो बनाती है किन्तु वह कुंठित अहम् को सहलाने में असमर्थ है। यही कुंठा उसके दाम्पत्य–जीवन को विफल बनाती है। जया इस अहम् को स्व–पीड़न रति में खोजती है। वस्तुतः यह एक काम–विकृति है। वह मानसिक यातना–पथ में गुजरकर, काम–तुष्टि का अनुभव करना चाहती है। जिसमें वह पूर्णतया विफल होती है।

'अमलतास' की कामदा के व्यक्तित्व में ज्ञान का अविकल समाहार है। पति द्वारा परित्यक्ता कामदा ऊपर से व्यवस्थित, अनाहत, सम्पन्न और प्रभा–मंडल से युक्त लगने वाली, अपनी अन्तः पीड़ा के समक्ष रिक्त है, उदासीन है। वह असाधारण

है। उसकी असाधारणता एक सार्थक साहस का परिणाम है उसमें मानसिक ऊर्जा और रागात्मक अभाव। अंततः हताश हरदेव पत्नी के पास आता है। ''आज मैं इस दुर्दशा में तुम्हारे पास आया हूँ'' इसलिए वह हरदेव से कहती है '' आज आपके पास कोई शरण नहीं है, कोई मित्र मद्दगार नहीं है, तभी आप मेरे पास आए हैं।..... देखिए मैं अब आपकी ब्याहता पत्नी नहीं हूँ, परित्यक्ता हूँ।.....बहरहाल आप यहाँ नहीं रह सकते।''[58] कामदा का पति के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार का कारण, उसको सम्पूर्ण जीवन में प्राप्त रागात्मक अभाव, अशान्ति, आक्रोश, कुंठा एवं उद्विग्नता है। कामदा प्रतिकूल आचरण से उसे पालना चाहती है। चाहे इसके लिए उसे अपने आप को क्रूर बनाना पड़ता है। पति के चले जाने पर वह रूदन करती दिखाई देती है। उसके रूदन में पश्चात्ताप की टीस सुनाई देती है। अंत में वह पति की रुग्णावस्था में उसकी सेवा–सुश्रूषा करती दिखाई देती है। कामदा को दोहरे व्यक्तित्व के बोझ की पीड़ा–सहनी पड़ती है। कामदा का प्रतिशोध–भाव केवल मनोवैज्ञानिक नियमों पर नहीं गढ़ा गया, उसमें जीवन का ईर्ष्यालु–भाव और भोगे हुए रागात्मक अभाव के मार्मिक क्षण भी हैं। वह परिणीता भी है और परित्यक्ता भी है। कामदा की मनः स्थिति देखने योग्य है।

'वंशज' की रेवा बुद्धि–प्राण छवि है। वह गम्भीर, साहसी, एकनिष्ठ, एकान्त–प्रिय और मनस्विनी है। उच्च मध्यमवर्ग की होने पर भी उसमें चंचलता का अभाव है। वह स्वभाव से गाम्भीर्य और चिन्तनशील है। रेवा अपने भाई सुधीर के प्रति पूरी तरह समर्पित है। वह भाई सुधीर को दान देने का शौक पाले है। सुधीर का परिणय सविता से हो जाता है। सुधीर कुंठित–प्रवृत्ति का व्यक्ति है। उसके

हृदय में पिता एवं पत्नी सविता के प्रति घृणा एवं आक्रोश है। रेवा भाई की मनः स्थिति समझती है। वह उसके मन की अशान्त अग्नि का शमन स्नेह–वर्षा से करती है। इतना अधिक स्नेह लुटाने वाली रेवा को, भाभी का तिरस्कार एवं उपेक्षा सहनी पड़ती है। इन परिस्थितियों में रेवा का अन्तर्द्वन्द्व अत्यधिक सहज बन पड़ा है।

'माणिक' की रंभा स्वभाव से ही विलासी एवं स्वच्छन्द–विहार की आकांक्षिणी है। वह भौतिकवादी सुख को जीवन की चरम उपलब्धि मानती है। नारी मन की भंगिमाओं के विश्लेषण में सिद्धहस्त शिवानी ने रंभा के भोक्तृत्व को बड़ी सफलता से अभिव्यक्त किया है। वासनातिरेक स्वभाव के कारण वह शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है। इस अपराध को छिपाने के लिए उसकी बहन नलिनी उसे पूना ले जाती है। ''धृष्टा छोटी बहन आज तक एक नहीं, अनेक ऐसे छोटे–मोटे अपराध कर चुकी थी।''**59** सामाजिक आदर्श और नैतिकवादी मूल्यों को वह अर्थहीन मानती है। रंभा के चरित्र में नारी–सुलभ ईर्ष्या और मानसिक प्रतिक्रिया का बड़ा ही सुन्दर नियोजन हुआ है। रंभा ने जब से नलिनी और दीना की मैत्री के विषय में सुना तब से उसे चैन नहीं था। दीदी के आवास पर दीना का आगमन रंभा के अन्तस में ईर्ष्या भर देता है। ''.....रंभा आत्म–सम्मान ताक में धर इतनी दूर चली आई थी।'' वह ईर्ष्या और उससे उत्पन्न मानसिक आघातों के कारण वाचालता से नलिनी के हृदय में दीना के प्रति रोष और घृणा उत्पन्न करना चाहती है। ''नहीं जीजी'' रंभा पीछे हट गई थी,– ''यह मेरी ओर से अब अपनी नई छोटी बहन को दे देना।''**60** वह दीना को देख कर चिढ़ गई थी। वह ईर्ष्या से जलने लगी थी। वह नलिनी दीदी की सम्पत्ति पर अपना ही अधिकार चाहती है। उनकी सम्पत्ति पर वह किसी

को भागीदार कभी भी स्वीकारने में सहमत नहीं थी। दीना जब नलिनी की हत्या कर फरार हो जाती है, तब स्वार्थी और लालची रंभा को सम्पत्ति की ही पड़ी थी और ''माणिक की अंगूठी?.....रंभा का रूँआसा स्वर क्रोध से काँप रहा था।''[61] रंभा जीवन में वैभव और विलास को ही सर्वोपरि मानती है। इसलिए वह अर्थ को अत्यधिक महत्व देती है वह अपनी दीदी की सम्पूर्ण सम्पत्ति पाकर, अपनी प्रत्येक अभिलाषा को परितृप्त करना चाहती है।

'सीढ़ियाँ' की मनीषा लैंगिक आकर्षण के कारण डॉ0 कश्यप के प्रति आकर्षित है। वह अपने अचेतन से प्रश्न पूछती है ''क्या वह सचमुच डॉ0 कश्यप से प्यार करने लगी है?'' वह अपने मन–मन्दिर में कश्यप की छवि बसाए है कि अचानक कब चोर दरवाजे से सुकेत का आकर्षण–चुम्बक उसे अपनी ओर खींच रहा था। उसके अन्तस में इड और ईगो का संघर्ष होता है वह एकान्त में स्वयं से प्रश्नोत्तर करती है ''है, है, है, कैसे नहीं? अपने हृदय पर हाथ रखकर पूछो जरा, बहुत धीरे से सुनो तुम्हारी वह इच्छा कितनी खामोशी से तुम्हारे कानों में फुसफुसा रही है, सुनो, सुनो।''[62] उसका इड कामुकता के कारण डॉ0 कश्यप और सुकेत का क्रमशः वरण करना चाहता है पर ईगो सामाजिकता के भय से मनीषा को इस समर्पण से वंचित करता है। इस कारण मनीषा में मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है, लेकिन सुपर ईगो के हस्तक्षेप से मनीषा की लैंगिक संवेदनाएं उदात्त हो जाती हैं। इसीलिए वह समाज के अनुकूल आचरण करती है। वह सुकेत का परिणय शारदा से कर देती है और स्वयं इस द्वन्द्वात्मक स्थिति से मुक्ति पा लेती है।

पंजाबी–उपन्यासों में महिला रचनाकारों ने नारी–चरित्रों की मानसिक पर्तों को खोलकर, उनकी सजीव और स्वाभाविक अभिव्यक्ति की है। 'दिल्ली दीआं गलियां' की ऐलिस अतिशय रूप गर्विता और पति तनवीर की प्राण–प्रिया है। वह बुद्धि की तीक्ष्णता के साथ साहसी और शील–सम्पन्न भी है। वह पारिवारिक दायित्व से युक्त है। पति पर अभियोग लगने की परिस्थितियों में वह स्वयं पर मिथ्यारोप लगाती है। वह पत्नीत्व के सनातन कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनी रहती है। वह जानती है कि अहम्वादी तनवीर एक नेवी आफीसर है और वह परिस्थितियों की विपरीतावस्था से निराश तथा भयत्रस्त है। इसलिए ऐलिस पति की रक्षा के लिए अपने ऊपर बदनामी ले लेती है। इसी बदनामी के कारण उसके अन्तस में एक कुंठा बस जाती है। वह पाप–बोध से बोझिल होती चली जाती है। अन्ततोगत्वा कुंठित ऐलिस रुग्णावस्था में पहुँचती है। कैंसर हो जाने पर, उसके अन्तस में झूठ का बोझ रहता है। वह इस झूठ से मुक्ति हेतु बेचैन रहती है। वह कामिनी के समक्ष सत्य को उद्घाटित करती है। ''.....अपने ऊपर इल्जाम मैंने स्वयं लिया था कामिनी क्योंकि मिस्टर तनवीर को अगर किसी तरह बचाया जा सकता था, तो इस तरह ही.....दुनिया की कोई बदनामी नहीं थी, जो मैंने न सुनी हो, कई महीने हो गए सुनते, वही दर्द शायद कैंसर बन गया।''**63** ऐलिस का कैंसर उसकी कुंठा का ही विस्फोट है। ऐलिस बुद्धिवादी है इसलिए उसके निर्णय में दूरदर्शिता है। वह मनोवैज्ञानिक–ग्रन्थि से पीड़ित है। ऐलिस अपने अन्तर्विरोधों के साथ ही सामाजिक मूल्यों की रक्षा का प्रयास भी करती है। इस मनोवैज्ञानिक सत्यता को स्वीकारने में वह अपने साहस का परिचय देती है।

'धूप छां ते रुख' की कमललता के पति पुरुषोत्तम लैंगिक दृष्टि से अतृप्ति के कारण रीटा के प्रति आकर्षित हैं। कमल लता एक जटिल स्वभाव की नारी है। उसकी नृत्य करने की कला भी लैंगिक अभुक्ति को झुठलाने का एक प्रयास है। उसका यह प्रयास चेतन मन का है। कमललता के चरित्र का अपना भोग नहीं है। वह पुरुषोत्तम के चरित्र की प्रतिच्छाया है। वह पुरुषोत्तम की कुंठा निवारण हेतु नृत्य करना भी छोड़ देती है किन्तु तब भी पुरुषोत्तम रीटा से विमुख नहीं होता। कमललता पुरुषोत्तम को हीन–भावना से उभारने के लिए नूतन मार्ग अपनाती है। वह पुरुषोत्तम में ईर्ष्या–भाव जाग्रत करने के लिए अपने मित्र कंवल के विषय में मनगढ़न्त कहानियाँ गढ़ती है। कमल लता द्वारा कंवल के प्रति कथित प्रेम व्यवहारों से पुरुषोत्तम अधिक उत्तेजित होता है। पुरुषोत्तम के लिबिडो की दिशा उत्तेजना द्वारा परिवर्तित हो जाती है। रीता के प्रति उसका रागात्मक बन्धन टूट जाता है। कमल लता परिस्थितियों से टकराकर टूटती नहीं बल्कि अनुकूल आचरण करके न केवल अपने को बाँधे रखती है अपितु पति को भी सद्मार्ग पर लाने में सफल सिद्ध होती है। कमल लता का महत्वाकांक्षी मन परिणय–पश्चात अपनी विषम एवं विरोधी स्थिति पाकर क्षोभ से भर जाता है। कमल लता की विलक्षणता इसी बात में है कि उसके व्यक्तित्व में ज्ञान, रूप और बुद्धि का संगम है। कमल लता के अन्तस में अथाह पीड़ा है। बाह्य रूप में व्यवस्थित, अनाहत, प्रभायुक्त लगने वाली कमल लता आन्तरिक संघर्ष–समक्ष रिक्त और उदासीन है। उसमें त्याग भी है और दृढ़–संकल्प भी इसलिए वह भटके पुरुषोत्तम की मानसिक एवं स्वाभावगत परिस्थितियों को परिवर्तित करने में सफल होती है। कमल लता के चरित्र में नारी–सुलभ ईर्ष्या और मानसिक प्रतिक्रिया का बड़ा ही सुन्दर नियोजन हुआ है।

'सब देश पराया' की ज्योति रूपगर्विता, पति–स्नेह पात्रा एवं बुद्धिवादी नारी है। पति की मृत्यु–पश्चात, ज्योति की मानसिक स्थिति विक्षिप्त हो गई। ज्योति सोचती है, उसके पति अमेरिका गए हुए हैं। वह अपने बेटे बिल्लू से कहती है ''आ लैण दे तेरे डैडी नू दसूंगी.....जे भला गौतम इस गड़डी आ जावे। ओसने मन ही मन विच किहा.....।''[64] गौतम के मित्र जतिन्दर में वह गौतम का विस्थापन करने का प्रयास करती है। इसीलिए वह जतिन्दर के विवाह–प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है। वह जतिन्दर में गौतम को ढूँढ़ने का अथक प्रयत्न करती है किन्तु असफल होती है। अन्ततोगत्वा वह अवसाद से उन्मादग्रस्त होकर आत्महत्या करती है।

'डाक्टर देव' की ममता बुद्धिवादी, सुशिक्षित, रूपवती नारी है। उसमें विचारों की प्रधानता है। ममता अपने पूर्व–राग के कारण दाम्पत्य–जीवन के मध्य–सन्तुलन बनाए रखने की चेष्टा करती है। ममता का पति जगदीश उसे वर्तमान की सुख–समृद्धि देना चाहता है। ममता भी अपने पूर्व–प्रेमी की स्मृतियाँ भुला कर, अपने अभाव को मिटाना चाहती है। लेकिन जो वर्तमान में है, वह उसका उपभोग करने में असफल है। उसके अचेतन में अपने प्रियतम देव की स्मृति छायी रहती है। वह उसे विस्मृत करने में असमर्थ है। वह देव को अपना मानस–धन स्वीकार कर चुकी है। ममता का अहम्–भाव इतना शक्तिशाली है कि किसी भी नई स्थिति से सन्धि करने में असमर्थ है। वह पति के प्रति लैंगिक दृष्टि से अनुरक्त रहकर भी, उसके साथ समायोजन करने में असफल है। वह सुख की इच्छा रखकर जगदीश की ईमानदार पत्नी बनना चाहती है। अहम्–प्रधान एवं लैंगिक अतृप्ति से प्रभावित ममता के जीवन में समझौते एवं समर्पण का अभाव है। पति जगदीश को ममता के पूर्व प्रेम का

रहस्य ज्ञात होता है इसलिए वह बेटी रंजू को ममता से विलग रखना चाहता है। ममता अपनी लिबिडो–ग्रन्थि का उदात्तीकरण करती है। वह एक शिक्षिका के रूप में अपनी वासना को परिवर्तित करती है। लैंगिक–कुंठावश ममता से उसकी पुत्री और पति विलग हो गए। उसका परिवार बिखर गया। वह होस्टल की चार–दीवारी में अकेले विगत के पृष्ठों को पलटती है। उसके हाथ विफलता ही लगती है। ममता कुंठित अवश्य है किन्तु अकर्मण्य नहीं। वह जीवन जीने की नई दिशा खोजती है और शिष्यों में ममत्व की पूर्ति पाती है।

'कोई नहीं जाणदा' की वेणु के आचरण की विषमता और धार्मिकता उसके चरित्र के दो बाह्य पक्ष हैं। ये दोनों प्रवृत्तियां उसकी लैंगिक–अतृप्ति का परिणाम हैं। इच्छा–विपरीत पति के अनुरूप आचरण करने के कारण उसमें विषमता आ गई है। दाम्पत्य–जीवन की विफलताओं से उत्पन्न विषमता को मिटाने के लिए वह मन ही मन आस्तिक भी है। वह ससुराल में सिन्ध नदी के पवित्र जल को इसलिए नहीं ले जाती क्योंकि ससुराल की प्रत्येक वस्तु अपवित्र और अशुद्ध है। दोहरी प्रवृत्तियों को आत्मसात करने के प्रयास में, उसकी लिबिडो–ग्रन्थि कुंठित हो गई है। वेणु के सम्पूर्ण जीवन का नियंत्रक उसका पूर्व–राग है। विवाह–पूर्व वह चन्दन के रागात्मक–सम्बन्ध सूत्र में आबद्ध थी। उसका चन्दन से विफल प्रेम–सम्बन्ध उसके सम्पूर्ण जीवन को नियन्त्रित करता है। वह कुण्ठित रहती है। चंदन की स्मृतियाँ उसे सालती भी हैं और दाम्पत्य जीवन जीने की प्रेरणा भी देती हैं। वह वर्तमान जीवन–आलोक में विगत जीवन की कुंठाओं की सम्पदा समेटे, नीरस पारिवारिक परिवेश में जीती है।

अमृता प्रीतम ने 'इक सी अनीता' की अनीता का निर्माण अमांसल, अमूर्त, नैतिकतावादी मान्यताओं के मध्य किया है। वह पुरातन और आधुनिक दोनों रूपों में संघर्षरत् है। उसका निर्माण लेखिका ने पर–पुरुष की गाँठ खोलने के लिए किया है। इस संदर्भ में उसके 'स्व' की गाँठ भी ढ़ीली पड़ जाती है। वह जिस पारिवारिक परिवेश में जीती है, उसमें वह स्वयं को संतुलित नहीं रख पाती। कुंठित–वासनात्मकवृत्ति के कारण उसका आन्तरिक संतुलन खो सा गया है। अनीता अपनी कुंठित रागात्मकवृत्ति की मुक्ति के प्रयास में, पति सचदेव को त्याग कर, सागर के प्रति आकर्षित होती है। अनीता सागर के सानिध्य से अपनी कुंठा को सहलाने का प्रयास करती है। वह सागर के बुझे हुए सिगरेट के टुकड़े को जलाती है और सिगरेट पीती है। सिगरेट के धुएँ में उसे सागर की साँसों की खुशबू आती है। इस प्रकार वह अपनी दमित–कामेच्छा को तृप्त करना चाहती है। अनीता का सिगरेट पीना और एकान्त में प्रियतम सागर का जन्मदिन मनाना ये काम अतृप्ति के ही लक्षण हैं। अनीता का अन्तर्द्वन्द्व उसे व्याकुल करता है। घर के परिवेश से बुझने वाली, अनीता सागर के स्नेह में जलना चाहती है। सागर की निकटता बनाए रखने के लिये, वह सिगरेट को माध्यम बनाती है। लेकिन लिबिड़ो–ग्रन्थि की असंतुष्टि से वह सागर को भी त्याग देती है। वह इकबाल के प्रति समर्पित होती है। इकबाल के सानिध्य में उसे संतुष्टि प्राप्त होती है।

'ऐहु हमारा जीवणा' की भागवन्ती उन्मुक्त और निर्द्वन्द्व प्रेम–व्यापार में रत रहना चाहती है। पूर्व–राग से प्रवंचित एवं पति परित्यक्ता होने के कारण, उसके मन में एक गाँठ पड़ गई है। उसमें नारी–सुलभ ईर्ष्या की अधिकता है। उसके

चरित्र में संतुलन का अभाव है। वह जिन पारिवारिक परिस्थितियों में जीती है, उनका पूर्णतः भोग नहीं कर पाती। वह अपने अभाव को मिटाना चाहती है। भानो उसकी सौत है। सौतिया–डाह भी उसे आक्रान्त किए रहता है। वह भानो को अपने रास्ते का कंटक समझती है। इसीलिए भानो से वह लड़ती–झगड़ती है। भागवन्ती के व्यक्तित्व का स्वाभाविक विकास अवरुद्ध सा हो गया है। वह कलह प्रिय अहम्वादी जटिल व्यक्तित्व की नारी है।

4-4 **काम अतृप्ति से प्रभावित कुंठित चरित्र :**

व्यक्ति में 'काम' संवेग स्वाभाविक और जन्मजात है। शिशु जन्म से ही अपनी माँ के सानिध्य और स्तनपान से काम–भुक्ति पाता है। युवावस्था में विपरीत लैंगिक आकर्षण और रागात्मक–वृत्ति की तृप्ति ही उसे संतुष्ट करती है। व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छापूर्ति में जब बाधाएं उत्पन्न होती हैं। तब वह कुंठित हो जाता है। महिला उपन्यासकारों ने भी उपन्यासों में काम–अतृप्ति से प्रभावित कुंठित चरित्रों का निर्माण किया है।

'भैरवी' की राजेश्वरी वेश्या पुत्र कुन्दन के प्रति आकर्षित होती है। वह स्कूल से लौटते समय अपनी सखी चन्द्रिका के साथ उसके घर चली जाती है। माँ के मना करने पर भी वह चन्द्रिका के गृह जाती है। राजेश्वरी को सखी से भी प्रिय उसका भाई कुन्दन था। वे कभी ताश खेलते और कभी पिकनिक पर जाते। काषारदेवी जाते ''.....हर फ्लांग की दूरी पार कर चट्टान पर किया गया वह विश्राम राजेश्वरी के चेहरे को और भी सुन्दर बना देता।''[65] राजेश्वरी कुन्दन के

साथ घर से पलायन करती है। राजेश्वरी को गृह–पलायन का कठोर दण्ड मिला। दुष्परिणाम यह हुआ कि राजेश्वरी का एक पचास वर्षीय सन्तानहीन हलवाई से परिणय हुआ। प्रौढ़, कुरूप और शंकालु प्रवृत्ति वाले उसके पति ने राजेश्वरी के प्रति बर्बरता और कठोरानुशासन की किले बन्दी कर रखी थी। यहाँ तक कि ''सुन्दर पत्नी द्वारा ईमानदारी से प्रस्तुत की गयी सन्तान को भी वह निर्मल चित्त से ग्रहण नहीं कर पाया।''**66** राजेश्वरी विवाह–पूर्वानुराग और प्रौढ एवं अनमेल पति के कारण कुंठित और अभुक्त रह गई थी। विवाह के दो वर्षों के पश्चात के वैधव्य–बोझ ने उसे और भी कुंठित कर दिया। उसकी लिबिडो–ग्रन्थि दमित हो गई। काम–अतृप्ति से प्रभावित हो उसका चरित्र कुंठित हो जाता है। इसीलिए वह अपनी पुत्री चन्दन को शिक्षित कर, उसका परिणय शीघ्र कर देती है, क्योंकि वह अपनी पुत्री को इस अभाव–ग्रस्तता और कुंठा में नहीं देखना चाहती। कहीं उसकी सुन्दर और रूपवान पुत्री चन्दन भी वह भूल न कर बैठे जो उसने की थी। वह अपनी काम–अतृप्ति की कुंठा का निवारण अपनी इकलौती पुत्री का परिणय शीघ्र कर देने में पाती है। उसे पुत्री के सुयोग्य वर के लिए पुनः अल्मोड़ा जाना पड़ता है। उसका मन अतीत की ओर प्रतिगमन करता है। उसका कामोद्वेग प्रखर हो जाता है। किन्तु वह बड़े प्रयास से अपने लिबिडो को नियंत्रित कर लेती है।

'चौदह फेरे' की मल्लिका के व्यक्तित्व में अतृप्ति और अकुलाहट की प्रधानता है। वह कर्नल साहब की प्रेयसी है। कर्नल की पत्नी नन्दा की विलासपूर्ण जीवन–पद्धति से वह ईर्ष्या करती है। वह ईर्ष्याग्नि में स्वयं तो जलती ही है और नंदा को भी इससे त्रसित करती है। मल्लिका पार्टी में नन्दी को जलाने के लिए

कभी अपने ''झीने, आँचल को अपने उन्नत उरोजों के उभार से जानबूझकर गिरा–गिरा देती और तृषित चातकी की दृष्टि से कर्नल को ही अपनी मुग्ध चाश्नी में बाँधकर, गर्व से नन्दी की ओर देखकर, मूक चुनौती दे डालती है।''[67] विलासपूर्ण इच्छाओं के दमन से मल्लिका हीन–ग्रन्थि से पीड़ित हो जाती है। वह एक ओर अपने प्रियतम के सुखद एवं विलासपूर्ण जीवन को देखती है तो दूसरी ओर विवशता और कटुता से भरे स्वयं के जीवन को देखती है। वह विवशता और कटुता से भरे स्वयं के जीवन के अन्तर्विरोधों के कारण, द्वन्द्वात्मक–प्रवृत्ति की प्रधानता से विचलित हो जाती है। वह नंदा को आहत करने के लिए नंदा के सामने उसके पति के प्रेम–सम्बन्धों की चर्चा करती है। मल्लिका के व्यवहार से नंदा मर्माहत होती है। वह किसी भी तरह कर्नल को छोड़ना नहीं चाहती है, बल्कि घेरे रहना चाहती है। पति की उपेक्षा देखकर भी, नंदा समस्यानुकूल समाधान ढूँढ़ने को कृत–संकल्प है। नंदा पति के तनाव को कम करना चाहती है। अन्त में विजय नंदा की ही होती है। अन्ततोगत्वा मल्लिका लिबिडो–ग्रन्थि का उदात्तीकरण कर, प्रायश्चित करती दिखाई देती है।

'गैंडा' की राज रूपवती और शिक्षिता है। वह स्वच्छन्द–प्रेम की आकांक्षिणी है। पति की बदसूरती से उसकी काम–वासना उग्र रूप धारण कर लेती है। इसलिए उसके व्यक्तित्व का कोई अपना भोग और जीवन की कोई अपनी स्थिति नहीं। वह कामुक–प्रवृत्ति की नारी है। पति की कुरूपता उसे और भी कामुक बना देती है। वह रागात्मक–तृप्ति हेतु, पहले तो अपनी सखी के पति रोहिताश्वदत्ता को माध्यम बनाती है किन्तु वह असंतुष्ट रहती है। पुनः वह इस अतृप्ति की पूर्ति हेतु,

होटल को माध्यम बनाती है। अपने शरीर पर दूसरों की दृष्टियों को झेलना, उसके लिए एक सुखद किन्तु विचित्र अनुभव है। वह कहती है ''होटल वाले ही मुझे सर आँखों पर रख लेंगे। वहाँ मेरी स्थिति अब इतनी मजबूत है, ''सू'' कि अपना मुँह मांगा दाम माँग सकती हूँ.....।''[68] राज का चरित्र अभुक्ति प्रधान–व्यक्तित्व की गहरी व्याख्या है।

'रतिविलाप' की हीरा क्रूर, निर्मम और कामुक–प्रवृत्ति की नारी है। हीरा अपराधी–प्रवृत्ति की है। उस पर एक अभियोग लगा था। इसलिए उसे कारागार में रहना पड़ता है। वह जेल से छूटने पर आश्रयदाती अनुसूया के गृह में शरण पाती है, किन्तु अपराधिनी हीरा अनुसूया के श्वसुर से रास–लीला रचाती है। हीरा उसकी देह को भोगती है। साहचर्य से एक पुत्र की प्राप्ति कर, हीरा सम्पत्ति हड़प कर, उसकी हत्या कर देती है। वह पुनः एक अन्य पुरुष का आश्रय लेती है। हीरा का चरित्र काम–अतृप्ति से कुंठित है। अस्वस्थ काम चेष्टाओं ने हीरा के व्यक्तित्व के विकास के सभी मार्ग अवरुद्ध कर दिए हैं।

'स्वामी' की मिनी नरेन्द्र की प्रेमिका है। वह विवाह–पूर्व ही नरेन्द्र से प्रेम करती है। वह नरेन्द्र की रतिबाला है। उसकी इच्छा–विपरीत घनश्याम से उसका परिणय हो जाता है। मधुयामिनी को उसका मन विचित्र दहशत से भर गया। ''जो ब्याह कर लाया है, वह अपना अधिकार छोड़ेगा भला?.....इस कल्पना मात्र से उसका मन घृणा से भर आया।''[69] वह नरेन्द्र के साथ हास–परिहास एवं आलिंगन–चुम्बन करती इत्यादि रति–क्रियाएं करती है। उसकी बाह्य काया आचार

युक्त है किन्तु भीतर वासनायुक्त है। पति की उदारता उसकी कामाग्नि को प्रज्जवलित करती है। माता गिरि का पत्र और पति के जेवर की माँग तो मिनी की क्रोधाग्नि को अत्यधिक प्रज्जवलित करते हैं। वह तिलमिलाकर ''एक–एक जेवर फेंकने लगी, ''लो–लो–लो।''.....तुमको डर लगा कि मैं तुम्हारा जेवर और कपड़ा लेकर माँ के घर चली जाऊँगी, पर इतनी भूखी और नींच नहीं है मिनी।''[70] वह नरेन्द्र की पुरा स्मृतियों में खोई रहती है। पति घनश्याम की अत्यधिक उदारता उसके लिबिडो को आहत करती है। पति ने जब मिनी को नीले रंग की साड़ी लाकर दी, ''तब कल्पना को जैसे पंख लग गए हैं। आँख मूँदते ही पति सामने आ खड़े होते हैं, मनुहार करते हुए, ''वह साड़ी पहनकर नहीं दिखाओगी?'' और फिर वह केवल साड़ी ही नहीं पहनती, सारा श्रृंगार करती है। पति की मुग्ध नजरों के सामने लज्ज़ित, संकुचित–सी उसकी देह कैसे अवश होकर पति की बाँहों में समा जाती है और इतने दिनों की खिंची हुई यह अभेध दीवार ढह जाती है। चटाई पर लेटे–लेटे कितनी ही बार उसकी समूची देह रोमांचित हो आई है। पर पति समय से ही आए।....जो कल्पनाएं कुछ देर पहले उसके तन–मन को पुलकित कर रही थीं वे ही अब सौ–सौ दंश बनकर उसका मन छलनी किए दे रही हैं।.....उसकी असली सुहागरात भी आँसुओं के बीच ही बीती थी, आज जिस सुहागरात की कल्पना की, उसकी परिणति भी आँसुओं में ही हुई। पर उस दिन विरक्ति और वितृष्णा से उसका मन भरा हुआ था और आज आकांक्षा और उपेक्षा से।''[71] मन्नू भंडारी ने मिनी के मन की कामुक चेष्टाओं की सहज अभिव्यक्ति की है। मिनी तृष्णा, अतृप्ति,

वासनात्मक अभिलाषा से परिपूर्ण है। विवाह के पूर्व की रागबद्धता से मिनी मुक्त नहीं हो पाती है। प्रकृति और पद में प्रेमी पति से श्रेष्ठ भी है। इस प्रेम के कारण एक प्रकार के पाप बोध से भी वह त्रस्त है। उसके चरित्र पर उसकी सास, ननद और देवरानी संदिग्ध भी हैं। वह चुपचाप सुनती और सहती है। पति की अतिशय उदारता से उसके संस्कार परिवर्तित होते हैं। उसकी भग्न कुंठा की निवृत्ति होती है। पति जब उसे मायके लेने आते हैं तब मिनी का हृदय परिवर्तित हो जाता है। वह पूर्णतः स्वामी को समर्पित हो जाती है।

'पत्थर वाली गली' की जेबां के पति पर तस्करी–अभियोग लगते हैं और वह कारागार में सजा काटता है। पति की अनुपस्थिति में जेबां पति के मित्र से सहवास करती है। यद्यपि इस सम्बन्ध की स्थापना वह अपने पति के कहे शब्दों का आदेश पालन करने हेतु करती है, ''मेरी हर चीज में तुम्हारा हिस्सा है, यहाँ तक मेरी बीबी में भी .....हम दिन बाँट लेंगे, जब मैं बाहर रहूँ तो तुम यहाँ रहो, जब तुम बाहर रहो तो मैं इसके साथ रहूँगा।''[72] किन्तु पति की अनुपस्थिति में जब वह उसके साथ साहचर्य स्थापित करती है और गर्भवती होती है तब उसका पति उसे पीटता है और गृह से निष्कासित कर देता है। जेबां पति के दोस्त का आश्रय लेती है। जेबां की कामुक–प्रवृत्ति को उत्तेजित करने वाला उसका पति ही है। पति की शह पर वह उसके मित्र से सानिध्य बनाती है और अपनी रागात्मक–वृत्ति की तृप्ति करती है।

'श्मशान चम्पा' की जूही रूपवती, गर्विता, विवेकहीन और कामुक–प्रवृत्ति की नारी है। वह मुस्लिम तनवीर के लिए गृह से पलायन करती है। लेकिन जब तनवीर

उसकी भोग–लिप्सा को संतुष्ट करने में असमर्थ है। तब वह तनवीर को भी त्याग देती है। वह अपनी बहन चम्पा से कहती है ''ओह, तुम क्या सोच रही हो, मैं अफगानिस्तान से यहां आई हूँ?.....ओह तनवीर ! उसने मुझे नहीं छोड़ा, दीदी, मैंने ही उसे छोड़ दिया।.....किन्तु मेरा अकर्मण्य पति मुझे कुछ भी नहीं दे पाया। ... .रात–रात भर मैं उसकी प्रतीक्षा में बैठी रहती। वह कभी आधी रात को लौटता। .....दीवार की ओर मुँह फेरकर, खर्राटे भरने लगता।.....भारत के प्रसिद्ध होटलों में मैं नाचती हूँ दीदी.....किन्तु जिस वेली डाँस ने मुझे प्रसिद्ध कर दिया था, वही अब मेरी पकड़ से खिसका जा रहा है। इसीलिए तो उपचार की आशा से यहाँ आई थी.....।''[73] प्रणय–सुख की प्राप्ति ही उसके जीवन का साध्य है। इसके लिए वह किसी भी साधन का उपयोग करने में सक्षम है। प्रेमी तनवीर से जब वह शारीरिक संसर्ग बनाने में असमर्थ है तब वह होटलों में नृत्य करती है। शारीरिक सुख एवं स्वच्छन्द आचारण जूही के चरित्र की विशेषता है। इसलिए वह सामाजिक–नैतिकता को नहीं मानती और समूचे आदर्शों–मूल्यों की धज्जियां उड़ाती है। नारी के रूप में जूही काम–कुंठित नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जो जीवन की वासनात्मक बाढ़ में बह जाती है। वह दमित अभिलाषाओं को पर पुरुषों के संसर्ग से संतुष्ट करना चाहती है।

पंजाबी महिला कथाकारों ने काम–अतृप्ति से प्रभावित कुंठित नारी पात्रों के मानसिक द्वन्द्व एवं घात–प्रतिघात के सूक्ष्म चित्रण से उपन्यास–साहित्य में अद्वितीय स्थान प्राप्त किया है। 'जय श्री' की कंदला वाचाल एवं रूपगर्विता है। वह एक धनाढ्य पिता की शिक्षित सन्तान है। कंदला स्वभाव से विलासी एवं अहम्वादी है।

प्रदर्शन–प्रवृत्ति उसका जन्मजात संस्कार है। उसके लिए सामाजिक आदर्श और नैतिक मूल्य अर्थहीन हैं। इसलिए वह क्लबों में नित्य नए पुरुषों के संसर्ग में आती है। वह सुरेश को अपने प्रेमी के रूप में मन ही मन वरण करती है। सुरेश के विचारों में ''कंदला शराब है। मस्ती है, तलखी है एक बार पीने को मन करता है।''[74] जय श्री को जब अपनी अभिलाषा भग्न होते दिखाई देती है, तब वह कुंठित और निराश होकर रूदन करती है। वह एक खुले कमरे में पलंग पर पड़ी क्रोधित होकर रूदन करती है। उसकी आन्तरिक भावनाओं को आघात पहुँचता है। वह आहत होकर निसहाय सी दिखाई देती है।

'पिंजर' की तारो भावना–प्रधान नारी है। वह प्रेम की प्यासी है। तारो का परिणय एक ऐसे पुरुष से होता है, जो दूसरी नारी के राग से आबद्ध है। तारो के विचार आत्मनिष्ठ हो जाते हैं। असफल दाम्पत्य–जीवन के कारण भी वह सन्तुलित रहकर, अपने दायित्वों को पूर्ण करना चाहती है किन्तु अहम् प्रधान व्यक्तित्व वाली तारो का इड ही अधिक शक्तिशाली और क्रियाशील है। तारो भीतर से टूट जाती है। उसका चरित्र बिखर जाता है। उसे जीवन निरुद्देश्य प्रतीत होने लगता है। उसके व्यक्तित्व का स्वाभाविक विकास अवरुद्ध हो जाता है। दमित काम–शक्ति के कारण वह हिस्टीरिया–रोग से ग्रस्त हो जाती है। रुग्णावस्था में वह चीखती और चिल्लाती है ''.....यह धोखा है। निरा धोखा है। मेरा ब्याह नहीं हुआ, तुम सब झूठ बोलते हो। तुमने मुझे क्यों पकड़ रखा है? परे हटो.....''[75] तारो के मन में एक ही कुंठा है कि वह कपड़े और रोटी के लिए अपने पति के आगे जिस्म बेचने वाली

वेश्या है। वह अपने पति की एक मात्र पत्नी बनना चाहती है। वह पति को सम्पूर्ण रूप में पाना चाहती है। तारो का अन्तर्द्वन्द्व कर्त्तव्य से ऊपर है। वह बाहर से शान्त और गम्भीर रहती है किन्तु उसके भीतर का रागात्मक अन्तर्द्वन्द्व उसके व्यक्तित्व को दीन और रूग्ण बना देता है।

'तेरहवां सूरज' की मेनका का परिणय चौधरी से हुआ। इस अनमेल विवाह से वह अपने पति से काम–तृप्ति न पाकर, संजय से मित्रता करती है। रूपवती मेनका के लिए भौतिक–सुख ही जीवन का सार है। कामुक मेनका लैंगिक–अतृप्ति से आक्रान्त है। किसी भी परिस्थिति में वह अपनी विकल इच्छाओं को परितृप्त करना चाहती है। मेनका ने ''छोटे शीशे दे अग्गे खलोके वालाँ नू सवारिआं..... कहण लगी.....मिस्टर चौधरी टूर ते जा रहे ने, परसों, मैं घर इकल्ली होवांगी, उत्थे परसों रात...''।[76] परकीया प्रेम चाहे पवित्र नहीं लेकिन अतृप्त नारी को उसमें ही रस मिलता है। मेनका कम आयु वाले संजय के साथ एक उदण्ड, आवेगपूर्ण समागम की इच्छा रखती है। संजय के अस्वीकार करने पर, वह उसे रॉसकल कहती है। अपने प्रेम–व्यवहारों से संजय को उत्तेजित करने में विफल, मेनका त्रसित और कुंठित हो संजय को गालियां देती है। पति द्वारा असंतुष्ट और नायक द्वारा प्रवंचित होकर वह सीमाओं का अतिक्रमण करते देखी गई है। उसका यह व्यवहार काम–अतृप्ति की कुंठा के फलस्वरूप है।

'अगनी परिख्आि' की मनदीप स्वाभिमानी जीवन के प्रति आस्तिक, सामाजिक आदर्शों के प्रति विश्वास की भावना रखने वाली नारी है। अनुपम सुन्दरी मनदीप का हरदेव की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक है। उसके इस स्वाभाविक कार्य को

निर्ममतापूर्वक अनैतिक कह दिया जाता है। उसका प्रियतम उससे विलग हो जाता है। परिणामतः एक दुर्बल, कुंठित, असभ्य, शराबी जगपाल से उसका परिणय हो जाता है। इसीलिए भीतर से उपेक्षित किन्तु बाहर से समर्पित समाज के आदर्शों की छाया में मूक नारी के लिए निर्मित पीड़ा–चक्र में मनदीप के स्नेह–सूत्र उलझते जाते हैं। वह उखड़ती जाती है, झुकती जाती है और अन्ततः टूट जाती है। विवाह के पूर्व मनदीप के राग का आलम्बन हरदेव था और विवाह के पश्चात उसका उद्दण्ड और असभ्य पति जगपाल उसके हृदय में कोई भी हरदेव का स्थान नहीं ले सका। परिणामस्वरूप मनदीप अपने कुंठित प्रेम और नैतिकता के द्वन्द्व से त्रस्त हो जाती है। पति की उद्दण्डता का उस पर इतना दबाव पड़ता है कि वह निषिद्ध कर्म की ओर तत्पर होकर आत्महत्या करने का प्रयास करती है। अपने परिवेश में समायोजन करने में असमर्थ मनदीप जगपाल को पिस्तौल देकर कहती है कि वह उसको जान से मार दे। वह अपने परिवेश के मुक्ति पाने के लिए पति से तलाक भी लेती है। उसका प्रतिशोधी मन पति–गृह का त्याग कर अपने स्वच्छन्द आचरण से समाज में विप्लव लाना चाहता है। मनदीप में रागात्मक–अतृप्ति से कुंठा उत्पन्न होती है। वह दिशाहीन होकर काम–विकृति की शिकार बनती है। उसका स्वाभाविक विकास–अवरुद्ध हो जाता है।

'सूरज ते समुन्दर' की रानी लेखक इन्दर की प्रेयसी और डाक्टर की परिणीता है। पति की व्यस्तता से रानी की लैंगिक अतृप्ति बनी रहती है। मनदीप अपने प्रेम–व्यवहारों से प्रियतम को उत्तेजित करके आत्म–समपर्ण करती है। नित्य नवीन समागम–क्रिया में व्यस्त उसके लिए नैतिकता महत्वहीन है। किसी भी

परिस्थिति में वह लैंगिक तृप्ति चाहती है। पति की अनुपस्थिति में वह प्रेमी संग दिल्ली और अमृतसर जाती है। एक होटल में वह इन्दर के साथ ठहरती है। इन्दर रजिस्टर में रानी के लिए मिसेज इन्दर लिखता है। तब उस क्षण रानी को लगा कि उसका इस संसार से कोई वास्ता नहीं आज वह मिसेज इन्दर है। वह ''आपणे नू अजनबीआँ वांग वेख रही सी। आपणे आप दी जिवें उस नू पहिचाण नहीं सी आ रही।'' वह इन्दर से कहती है कि चलो किसी दूसरे देश में भाग चलें। प्रेम–क्रीड़ा में वह अपने को एक आदर्श प्रेमिका की भूमिका में रखती है। उसके जीवन का चरम साध्य कामुक–तृप्ति है। इसके लिए वह सीमाओं का अतिक्रमण करती है। इसके लिए न तो उसमें आत्मग्लानि है और न ही परम्पराओं को अनुपालन करने का कर्त्तव्य–बोध। वह तो बस लैंगिक तृप्ति ही चाहती है।

'एकता' की एकता परिणीता भी है और परित्यक्ता भी। पति से सम्बन्ध–विच्छेद हो जाने पर, वह कुंठित हो जाती है। वह प्रायः उदास सी रहने लगती है। उसका अन्तस आन्दोलित होता है। वह निराशा को अपने जीवन में प्रवेश नहीं करने देना चाहती है। पति द्वारा प्रताड़ित होकर भी वह खुश रहना चाहती है, इसीलिए वह अपने भाई के व्यापार के लिए मास्को और बलगारिया जाती है। वहाँ के वृक्षों को देखकर उसका मन–मयूर झूम उठता है। उसका रोम–रोम आनन्द से पुलकित हो उठता है। वह प्रसन्न होकर भाई अरुण को पत्र लिखकर वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य की चर्चा करती है। उसके हृदयोद्‌गारों से भाई की प्रसन्नता का भी कोई ठिकाना नहीं रहता। वह अपनी बहन के लिए अश्रुप्लावित होकर चिन्तन करता है कि 'वह धरती कितनी अमीर है जो तुम्हें किसी जगह की शक्ल में इतना

कुछ दे सकी है.....पर यह धरती कितनी गरीब है, जो तुम्हें मनुष्य की शक्ल में कुछ भी नहीं दे सकती.....।' एकता अपनी लिबिडो–ग्रन्थि का उदात्तीकरण करती है। लेखिका द्वारा निर्मित सामाजिक जड़ता और नैतिकतावादी स्वरों से अनुप्राणित होकर, एकता परिस्थिति से समझौता कर लेती है। वह अपनी आन्तरिक अकुलाहट को प्राकृतिक–सौन्दर्य में प्रत्यारोपित करती है। ये उदात्त–प्रवृत्तियाँ उसके चरित्र के स्वाभाविक विकास में सहायक सिद्ध होती हैं।

'पोस्ट मार्टम' की मीरा शिक्षित और अविवाहित नारी है। पोस्टमार्टम में लैंगिक–सम्बन्धों की महत्ता की अभिव्यक्ति की गई है। मीरा के रागात्मक सम्बन्धों के घात–प्रतिघात में सम्पूर्ण कथा गूँथी गई है। जब तक पुरुष और स्त्री के बीच नर और नारी के सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से प्रस्थापित नहीं हो जाते तब तक उनके सारे सम्बन्ध अनैतिक रह जाते हैं। बढ़ती उम्र के कारण मीरा की मूल–प्रवृत्ति (लिबिडो) कुंठित हो जाती है। उसकी इस काम–कुंठा को अविनाश सहलाता है। अविनाश का सानिध्य पाकर, मीरा कामेच्छा की संतुष्टि पाती है। अविनाश एक दुर्बल व्यक्तित्व का पुरुष है वह मीरा को धोखा देकर चला जाता है। मीरा की इच्छाओं का पोस्टमार्टम होता है। उसके प्राण स्पन्दन–हीन रह जाते हैं। अंततः वह कुंठित हो जाती है।

'कटीआं लकीरां टुॅटे त्रिकोण' की सिम्मी के व्यक्तित्व में ज्ञान और रूप का अविकल समाहार है। उसका रूप एक अदृश्य, अस्पृश्य–कवच–ओढ़े है। उसमें बुद्धिमानी तीव्र संवेदना के साथ गुंथी हुई है। सिम्मी अविवाहित शिक्षिका है। उसकी मूल–प्रवृत्ति (लिबिडो) उसे ईश्वरचन्द (ईशु) के प्रति आकर्षित करती है। ईशु का

सम्पर्क पाकर, उसकी मिथुन–मुद्राएं क्रियान्वित होती हैं। वह ईशु के प्रति समर्पित हो, रति–क्रिया में तृप्ति पाती है। सिम्मी में नारी सुलभ ईर्ष्या भावना भी है। जब वह ईशु की अन्य प्रेमिकाओं को देखती है तब आग बबूला हो उससे विलग हो जाती है। उसमें समर्पण और प्रतिरोध दोनों ही हैं। वह ईशु से उन्मुक्त रहकर उसे सालना चाहती है। इसके लिए उसको क्रूर होना पड़ता है, लेकिन वह अपनी रिक्तता को भर सकने में असमर्थ है। इन संघर्षों के बीच उसके व्यक्तित्व को चाहे विराटता न मिली हो किन्तु प्रसार अवश्य मिला है। इसी प्रसार के कारण वह पुनः ईशु से मित्रता करती है। अन्ततः उसकी काम–कुंठा का निवारण होता है। हाँ सिम्मी काम–कुंठित नारी अवश्य है लेकिन इसके लिए वह अन्य पुरुषों का संसर्ग नहीं करती। वह प्रारम्भ से अन्त तक केवल एक ही प्रेमी ईश्वरचन्द्र को पूर्णतः समर्पित है।

'धूप छां ते रुख' की मिस रीटा वाचाल एवं रूपगर्विता है। वह कामुक–प्रवृत्ति की नारी है। शारीरिक–संतुष्टि ही उसके जीवन का उद्‌देश्य है। वह स्वच्छन्द और उन्मुक्त प्रेम की आकांक्षिणी है। सामाजिक आदर्श और नैतिकतावादी मूल्य उसके लिए व्यर्थ हैं। वह जीवन के अनेक अस्त–व्यस्त क्षणों में, अनेक पुरुषों के सम्पर्क में आती है। वह समाज के प्रतिकूल आचरण करके अपने स्वच्छन्द स्वरूप की स्थापना करना चाहती है। वह जीवन में किसी प्रकार के बन्धन को मृत्युतुल्य मानती है। वासनातिरेक और उन्मुक्त प्रवृत्ति वाली रीटा एक कालेज में लेक्चरर है। वह परिणय–सूत्र को एक बन्धन मानती है। वह उन्मुक्त रहकर अपनी लिबिडो को संतुष्ट करना चाहती है। पहले वह पुरुषोत्तम से रासलीला करती है। फिर दूसरे से

प्रेम करती है। उसका प्रेम अस्थिर है। जब वह एक प्रेमी से ऊब जाती है तब वह दूसरा प्रेमी बनाती है अथवा एक ही साथ दो तीन पुरुषों से प्रेम करती है। मिस रीटा काम–कुंठा से आक्रान्त है। वह इस कुंठा से निवृत्ति हेतु, भटकती दिखाई देती है।

4-5 हीन-भावना से प्रभावित नारी चरित्र :

'आँखों की दहलीज' की तालिया रूपवती परिणीता है। तालिया विवाह के पश्चात जावेद के प्रति आकर्षित होती है। जावेद तालिया के रूप–सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है। तालिया को भी अपने नीरस जीवन में जावेद का आगमन राग–बद्धता दे रहा था। जावेद और तालिया की दूरियां समाप्त हो रही थीं। जावेद तालिया को अपने घर आने का निमंत्रण देता है। तालिया जावेद के गृह जाती है और उसके कमरे का निरीक्षण करते अकस्मात् उसका अचेतन हीन–भावना से ग्रसित हो जाता है ''उसकी आँखें किसी अनजान हाथों को चूड़ियाँ पहने सिंगार करते देख रही थीं। कैसी होगी जावेद की बीबी? और उसका बच्चा क्या जावेद जैसा दिखता होगा?''[77] मातृत्व सुख से वंचित तालिया के अचेतन में हीन–ग्रथि बन गई। वह निरीह और असहाय सी हो गई। उसका व्यक्तित्व अस्त–व्यस्त हो गया। वह दाम्पत्य–जीवन को त्याग कर पश्चात्ताप करती है।

'सुरंगमा' की राजलक्ष्मी कुटिल, लोभी एवं अहम्वादी गजानन की परिणीता है। गजानन जोशी पंडित बन भोले–भाले लोगों से धन ऐंठता है। राजलक्ष्मी को पति का पाखण्ड असहनीय है। वह पति को ऐसा करने से रोकना चाहती है लेकिन पति के दुर्व्यवहार–समक्ष उसकी एक भी पेश नहीं चलती। गजानन अपने कुकर्मों

को स्वीकारने के विपरीत राजलक्ष्मी को प्रताड़ित करता। वह उसका उपहास करता है। पति के कुकृत्यों और प्रताड़नाओं से राजलक्ष्मी कुंठित हो जाती है। ''नशे मं धुत गजानन ने कहा ''कुलटा, तुझे आज नहीं छोडूंगा, चाहे फांसी पर ही लटकना पड़े।''[78] उसने दिन–रात प्रताड़ित कर, राजलक्ष्मी को ऐसी हीन–भावना से त्रस्त कर दिया था कि वह हीनता वश आत्महत्या करने का प्रयास करती है।

'उसके हिस्से की धूप' की मनीषा जितेन की परिणीता है। यौनात्मक–परितृप्ति हेतु, वह अविवाहित मधुकर नागपाल से रास–लीला रचाती है। वह पति से सम्बन्ध–विच्छेद कर, मुधकर से पुनर्विवाह करती है। वह मधुकर नागपाल से पुनर्विवाह तो कर लेती है किन्तु उसके समागम के समय उसका अचेतन हीन–भावना से ग्रसित होकर उसे प्रताड़ित करता है। ''जब मधुकर का मुख दुबारा उसके मुख पर झुका तो सहसा, कोड़े के वार के समान उसे याद आ गया कि यह प्रथम चुम्बन नहीं है। इससे पहले जितेन के अनेकानेक तीखे चुम्बनों को वह सह चुकी है।''[79] कामुकता से उत्पन्नहीन भावना के कारण मनीषा का व्यक्तित्व संवेदना प्रधान है। उसके जीवन में सामाजिक परिस्थितियाँ इतनी तीव्र हो जाती हैं कि वह संतुलन खो बैठती है।

'एक इंच मुस्कान' की अमला की हीन–भावना के दो कारण हैं–अहम् और प्रतिशोध की भावना। किशोरी बाबू की परित्यक्ता होने के कारण उसके अहम् को ठेस पहुँचती है। वह एक प्रकार की हीनग्रन्थि से कुंठित हो उठती है। वह अपनी इस ग्रन्थि की निवृत्ति के लिए पुरुषवर्ग से प्रतिशोध लेना चाहती है। वह पुरुषों से आत्मीयता स्थापित कर, उन्हें अपने जीवन में परोक्ष रूप से आमंत्रण देती है लेकिन

जैसे ही पुरुष उसका समागम चाहता है, वह अपने कठोर अनुशासित आचरण से उसे अस्वीकार कर देती है। इस व्यवहार से उसकी हीन–भावना को संतुष्टि मिलती है। वह पहले तो कैलाश को अपने जीवन में आगमन की स्वतंत्रता देती है। ''उस दिन इन्हीं आँखों के जादू से बँधी–बँधी अमला कैलाश के साथ कितनी लम्बी ड्राइव पर गई थी। कैलाश कहता, 'अब गाड़ी मोड़ दूँ,' अमला नशीले स्वर में कहती नहीं, और दूर और दूर.....वह सब अमला की आँखों के सामने उभरा और चला, बस रह गई दो आँखें। आमंत्रण का वही भाव लिए दो आँखें। पर जहाँ उस दिन इन आँखों ने उसे पुलकित किया था, बाद में भी जब–तब उसके मन को सहलाया था, उन्हीं आँखों ने आज उसके हृदय को कचोटकर बुरी तरह मथ दिया?''**80** उसका अचेतन स्वयं स्वीकारता है ''विचार–विचार–विचार! आज तक मैंने अपने जीवन पर विचार और उसका विश्लेषण करने के अतिरिक्त किया ही क्या है? ये विचार ही मुझे भटकाते रहे हैं, जीवनपर्यन्त भटकाएँगे; भटकना मुझे स्वीकार है, पर किसी का बन्धन, किसी का दुराग्रह स्वीकार नहीं। अमला जीवन में सीमाओं, मर्यादाओं और बन्धनों को नहीं मानती, मानेगी भी नहीं.....।''**81** वह कैलाश के विवाह–प्रस्ताव को ठुकरा देती है। वह किसी के परिणय–सूत्र में बंधकर नहीं रहना चाहती। वह बन्धन–मुक्त सुख की कामना करती है। किसी भी पुरुष की सहानुभूति उसके लिए एक प्रवंचना है। वह स्वयं को अबला नहीं सबला मानती है। इसलिए उसे किसी भी पुरुष के सहारे की आवश्यकता नहीं ''.....किसी एक की होकर नहीं रहना चाहती, रह भी नहीं सकती। जिस दिन वह बँधी, उस दिन वह 'वह' नहीं रहेगी, उसका जीवन स्वच्छ जल की उन्मुक्त धारा नहीं रहेगा।, किनारों में बँधा

हुआ पोखर या तालाब हो जाएगा, जिसका पानी सड़ेगा, सड़ता ही रहेगा और एक दिन यूँ ही सूख जाएगा।

वह सड़ना नहीं चाहती, सूखना नहीं चाहती; बहना चाहती है, निरन्तर बहना चाहती है, अनजानी अनदेखी दिशाओं में बहना चाहती है, दूर.....दूर..... निरुद्देश्य सी लक्ष्यहीन.....सी.....पर निर्बन्ध और उन्मुक्त.....।''[82] चावला साहब जिनकी पत्नी के स्वर्गवास को बारह वर्ष हो चुके थे। अमला के साथ परिणय करना चाहते हैं। अमला के जन्मदिन पर गुलाब के पुष्प का उपहार इस बात का सूचक था, लेकिन अमला ने चावला साहब की भी उपेक्षा कर दी। अमर के प्रति वह मन से आत्म–समर्पित है। वह उसकी कला–साधना की प्रेरक और सृजन–शक्ति बनकर, उसकी कलात्मक शक्ति को जाग्रत करना चाहती है लेकिन वह उस अमर पर आसक्त है, जिसका पौरुष मर गया है।

प्रतिशोध और अहम् के कारण उसके जीवन में अस्थिरता और अविश्वास है। पुरुषों पर विजयी होने के कारण उसका अहम् अत्यधिक प्रबल हो गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की परम्परागत सीमाओं का उल्लंघन करना उसकी शीलगत विशेषता है। वह स्वच्छन्दता और उन्मुक्तता की आग्रही है। वह चाहती है कि कोई उससे प्रेम करे और उसका भोग करे पर उसके अधीन रहे। वह पुरुष से प्यार पाना चाहती है लेकिन देना नहीं चाहती केवल अभिनय से उसे व्यथित करना चाहती है। इन्हीं दो परस्पर विरोधी भावनाओं से उसमें अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। पुरुष से प्यार न पा सकने और अपनी लिबिडो–ग्रन्थि की असंतुष्टि के कारण वह हीन–भावना से ग्रसित है।

पंजाबी उपन्यासों में रचनाकारों ने नारी की हीन–भावना की अभिव्यक्ति बड़ी सजीव और स्वाभाविक रूप में की है। 'दूसरी सीता' की सीता रूपवती, शीलवती, सद्‌गुण सम्पन्न नायिका है। सीता के सद्‌व्यवहार से उसके पति, सास–श्वसुर सभी प्रसन्न रहते हैं। सीता भी अपनी ससुराल में अत्यधिक प्रसन्न रहती है। खेतों में जा रही सीता को अचानक शेर सिंह अपहृत कर लेता है। अपहृत सीता वहाँ से भागकर हरिद्वार में जाती है। हरिद्वार की सीढ़ियों पर प्रतिदिन इसी प्रतीक्षा में रहती है कि संभवतः उसके गाँव का कोई मिल जाए। एक दिन अपनी सास को देखते ही वह अपने पति के विषय में जानकर कहती है ''.....चंगा आपणे पुत्त नू आखीं मेरा बोलया चालया माफ कर देवे.....।''[83] सास से पति नाथ की विरक्ति की जानकारी पाकर सीता हीन–भावना से आक्रान्त हो गंगा की गोद में समा जाती है। 'बलिदान' की प्रेम खन्ना रूपगर्विता, वाचाल एवं नारी सुलभ चेष्टाओं से कुंठित नारी है। वह अपनी मसेरी बहन इन्दरा के पति मनमोहन से रास–लीला रचाती है। वह अपने प्रणय–प्रपंच से उसकी परिणीता बनती है। शनैः–शनैः वह इन्दरा का सर्वस्व चुरा लेती है। इन्दरा का सर्वस्व हर लेने के पश्चात भी इन्दरा मूक रहती है। इन्दरा का यह देवी रूप पेमी को अपराध–ग्रन्थि की पीड़ा से पीड़ित करता है। पेमी ने इन्दरा के पति को छीना, उसकी गृहस्थी छीनी, लेकिन इन्दरा उसके विरुद्ध कोई भी प्रतिक्रिया नहीं करती। इन्दरा का स्थिर चरित्र पेमी को अन्दर ही अन्दर सालता है। वह हीन–भावना से ग्रसित हो जाती है। उसमें पश्चात्तापाग्नि प्रज्जवलित होती है। वह इसकी ज्वालाओं से जलती और झुलसती है। अन्ततः वह इन्दरा के समक्ष क्षमायाचना करती है ''.....हुण तां मेरे अपराध बख्श दिओ। इसदा सबूत अपणा घर,

अपणा पती अपणा पुत्तर, अपणा सभकुझ संभाल लओ।''[84] बलिदान की प्रेमी खन्ना उर्फ पेमी की हीन–भावना का उदात्तीकरण होते देखा गया है। वह इन्दरा के बलिदान समक्ष अपराध–बोध से बोझिल हो उठती है। पश्चात्ताप के कारण उसका दम घुटता है। वह इस दम घोटू वातावरण से मुक्ति चाहती है। वह हीन–भावना से छुटकारा पाना चाहती है। इसलिए वह अपनी गृहस्थी, पति, पुत्र एवं सर्वस्व इन्दरा को लौटाना चाहती है।

'धरती सागर ते सीपियाँ' की मिनी प्रेमी नरेश की उपेक्षा पाकर, हीन–भावना से ग्रसित है। नरेश द्वारा उपेक्षित मिनी अचेतन की हीन–भावना का विस्थापन करती है। वह अपने अन्तर्द्वन्द्व का विस्थापन करती है। वह अपने को सामाजिक कृत्यों में व्यस्त रखती है। वह समाज–सेवा करती है। वह साक्षरता–अभियान चलाकर कई निरक्षरों को साक्षर करती है। वह असहाय और रोगियों की परिचर्या भी करती है। मिनी नरेश से प्रेम करती है, लेकिन नरेश की उपेक्षा से उसका ग्रन्थि–बन्धन जग्गी से हो जाता है। जग्गी की परिणीता बनने के पश्चात भी वह नरेश को विस्मृत करने में असमर्थ है। वह अपने असफल प्रेम के उच्छवास को व्यक्त करने के लिए व्यथित है। वह अपनी प्रेम–पीड़ा की हीन–ग्रन्थि निवारण के लिए नाना विधि प्रयास करती है। इस ग्रन्थि के निवारणार्थ पहले वह समाज–सुधारिका बनती है। जब उसकी ग्रन्थि का विलय नहीं होता तब वह जग्गी की परिणीता भी बनती है, किन्तु प्रियतम द्वारा तिरस्कृत हृदय को शान्त करने में असमर्थ मिनी विनाशकारी–प्रवृत्ति अपनाती है। वह नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या कर लेती है।

'धरती सागर ते सीपियां' की दूसरी नारी चम्पा, चाचा के कठोर नियंत्रण और दुर्व्यवहार के कारण हीन–भावना से पीड़ित है। कटु वातावरण के कारण, चम्पा मनोविकृतियों से ग्रसित हो जाती है। चम्पा अपनी हीन–भावना की निवृत्ति हेतु सुमेर से प्रेम करती है। सुमेर एक स्वार्थी–प्रवृत्ति का पुरुष है। वह चम्पा की भावनाओं को ठेस पहुँचाकर चला जाता है। प्रेम–प्रवंचिता होकर वह हीन–भावना से पीड़ित होती है। वह सामाजिक बन्धन, आत्मोत्सर्ग–बद्धता, नैतिक–दायित्व आदि को पुरुष–वर्ग का प्रपंच मानती है। उसमें प्रदर्शन की प्रवृत्ति है। उसमें पुरुषों को अपने श्रृंगार से उत्तेजित करने की ललक है। चम्पा युवाओं को आकर्षित करती है। जब वह ऐसा करने में सफल हो जाती तब वह इस ओर से उपेक्षित हो जाती। वह युवक जितना उत्तेजित और दुखित होता, चम्पा के व्यथित मन को उतनी ही अधिक सांत्वना मिलती। इस प्रकार 'एक्सर साइज ऑफ पावर' करके उसके पितृ–प्रेम से अतृप्त मन को तृप्ति मिलती है। चम्पा पर पुरुषों को उत्तेजित और उत्पीड़ित करते–करते, हताश हो जाती है। अन्ततः वह अपनी हीन–ग्रन्थि के विरेचन का दूसरा मार्ग अपनाती है। वह चित्रकला में अपनी प्रवृत्तियों को लगाती है। वह चित्रकला–प्रदर्शनी लगाती है। लोगों की प्रशंसा उसकी हीन–भावना के विरेचन में सहायक होती है। अंततोगत्वा कला–प्रदर्शन में चम्पा के मनोविकारों का विरेचन होता है।

'वाट हमारी' की कंवल लैंगिक–प्रवृत्ति की अतिशयता से पीड़ित है। वासनात्मक स्वभाव एवं पुरुषों की उपेक्षा से उसकी लिबिडो–ग्रन्थि और ग्रसित होती है। वह अन्तर्विरोधों की नारी है। पुरुषों की उपेक्षा के कारण, वह हीन–भावना से पीड़ित है। वह पुरुष–वर्ग की प्रवंचना की शिकार है। अविवाहित पुरुषों की प्रवंचना

से पीड़ित कंवल रागात्मक तृप्ति हेतु विवाहित प्रोफेसर से मित्रता करती है। विवाहित प्रोफेसर उसे छोड़ेगे भी नहीं और उसकी मित्रता के समापन की सम्भावनाएं भी नहीं रहेंगी किन्तु प्रोफेसर के चले जाने के पश्चात वह हरनेक से ग्रन्थि–बंधन करती है। हरनेक की परिणीता बनने के पश्चात कंवल की लिबिडो–ग्रन्थि तृप्त हो जाती है। वासनापूर्ति हो जाने पर, कंवल की हीन–भावना का निराकरण हो जाता है और उसका व्यवहार परिवर्तित हो जाता है। वह हीनता से मुक्त होकर सामान्य नारी बन जाती है।

'पक्की हवेली' की चाची अपने देवर वकील से अवैध सम्बन्ध रखती है। परिणामस्वरूप उर्सी का जन्म होता है। चाची ईर्ष्यालु और कुंठित–प्रवृत्ति की नारी है। वह वकील साहब को पाने के लिए नानाविधि उपक्रम करती है। वह सौतिया–डाह वश हीन–भावना से ग्रसित है। वह रागात्मक–प्रवृत्ति के मार्ग में अपनी सौत को कंटक समझती है। इसलिए वह सौंफ के पानी में जहर मिलाकर उसकी हत्या करना चाहती है। इस षड़यन्त्र का रहस्योद्घाटन होते ही, उसकी हीन–भावना अपराध–बोध से बोझिल हो जाती है। हीनता की भावना को सहने में असमर्थ होकर, चाची नदी में कूदकर आत्महत्या कर लेती है।

'इक खत नां सजणा दे' की निन्द्रा विवाह के पूर्व की रागबद्धता से मुक्त नहीं हो पाती। निन्द्रा विदेश में विवाहित बी0एस0 के प्रेम–पाश में फंस जाती है। परिस्थितियों वश उसका परिणय पाल से होता है। पाल सहृदय और स्वस्थ विचारों वाला युवक है। निन्द्रा पाल के समक्ष अपने प्रेम–प्रसंग की चर्चा करती है। पाल निन्द्रा को बी0एस0 से मिलने की स्वीकृति दे देता है। जब निन्द्रा बी0एस0 से

मिलती है तब पाल का अचेतन आहत होता है। इस आघात के विरेचन के लिए पाल पतित होता है। पति का पतन देखकर निन्द्रा का मोह–भंग होता है। वह पाप–बोध से त्रस्त होती है। पति की हीनता के लिए वह प्रेमी का विस्थापन पति में ही करती है। वह पति की हीनता–निवृत्ति अपनी रागात्मकता से करती है। पाल निन्द्रा को पाकर हीन–भावना से मुक्त हो जाता है। निन्द्रा भी प्रेमी को विस्मृत कर पाप–बोध की हीनता से मुक्ति पाती है।

4-6 अर्थाभाव से कुंठित नारी चरित्र :

अर्थ (धन) जीवन को सरल बनाने में सहायक है। मानव जीवन पर्यन्त अर्थोपार्जन के नानाविधि उपक्रम करता है। कुछ तो अर्थोपार्जन में सफल हो जाते हैं और कुछ आजीवन दरिद्रता के दंश को झेलते हैं। दरिद्रता के कारण उनका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। उपन्यास–लेखिकाओं ने भी उपन्यासों में अर्थाभाव से कुंठित नारी चरित्रों का मनोविश्लेषण किया है।

'बंटता हुआ आदमी' का नायक शरद विपन्नातावश फिल्मी दुनिया की चकाचौंध की ओर आकृष्ट होता है। शरद अपनी पत्नी मंजु की उपेक्षा करता है। उसे अनीता की राग–बद्धता प्रिय है। मंजु दोहरी प्रताड़ना को झेलती है। पति की उपेक्षा और विपन्नता। शरद फिल्मी–जगत से तनाव लेकर लौटता है। अर्थाभाव, पत्नी और प्रेयसी की त्रिकोणात्मक स्थिति में वह संघर्षरत है। मंजु को पति की उदासीनता और विपन्नता कुंठित कर देती है।

'नावें' की मालती अर्थाभाव से विवाहित सोमनाथ से साहचर्य स्थापित करती है। परिणाम स्वरूप वह नीलिमा को जन्म देती है। वह विजयेश से ग्रन्थि–बन्धन

कर लेती है किन्तु वह विवाह पूर्व प्रियतम सोमनाथ के सानिध्य को विस्मृत करने में असमर्थ है। विवाह के पूर्व मालती के राग का आलम्बन सोमनाथ था और विवाह–पश्चात उसका पति (विजयेश) सोमनाथ का स्थान नहीं ले सका। परिणामस्वरूप मालती अपने कुंठित प्रेम और नैतिक विवेक के द्वन्द्व से त्रसित हो जाती है। नैतिकता और सामाजिक नियमों के बोझ से वह बोझिल और कुंठित हो जाती है। पुत्री नीलिमा के पत्र से उसका आहत मन संतोष प्राप्त करता है।

'उसका घर' की ऐलमा विपन्न परिवार की सदस्या है। ऐलमा को भाई के लिए आहूजा से परिणय करना पड़ता है। आहूजा कामुक–प्रवृत्ति का पुरुष है। आहूजा ऐलमा को भोग्या समझकर उसका भोग करता है और ऊब जाने पर जीर्ण–वस्त्रों की भांति उतार कर फेंक देता है। आहूजा की परित्यक्ता ऐलमा को अर्थाभाव के कारण कुठित होना पड़ता है। ऐलमा एक तरफ विपन्न परिस्थितियों की शिकार है, दूसरी तरफ पति के परित्याग से संघर्षों को झेलती है। अंततः वह कुंठित हो जाती है।

'कोरजा' की फातमा अनाथ, अर्थाभाव एवं मातृ–पितृ स्नेह हीन युवती है। फातमा करीम मियां की परिणीता है। अनाथ फातमा ने पति–गृह को हारिल पक्षी की लकड़ी की तरह जकड़ रखा था। वह इस भय–कुंठा से कुंठित थी कि यदि पति–गृह छूट गया तब वह कहाँ जाएगी। करीम मियां पत्नी की इस कमजोरी का दुरुपयोग कर, उसे सदैव प्रताड़ित करते रहते। पति–प्रताड़नाएं सहकर भी वह पति–गृह में डटी थी। अहम्वादी करीम मियां को इतने पर भी संतुष्टि नहीं होती। वह फातमा को निष्कासित कर देते हैं। पति परित्यक्ता फातमा ससुराल में शरण लेती है। अर्थाभाव एवं कुंठाग्रस्त फातमा पीलिया–रोग से पीड़ित होती है। फातमा का उपयुक्त उपचार न हो सकने के कारण देहावसान हो जाता है।

'पचपन खम्भें लाल दीवारें' की सुषमा पितृहीन एवं अर्थाभाव वश पारिवारिक बोझ से बोझिल है। इसलिए सुषमा को पति की आकांक्षा न थी और न ही उसे प्रेमी चाहिए था। लेकिन लिबिडो एक स्वाभाविक संवेग है। इसलिए कभी–कभी उसका मन न जाने क्यों डूबने लगता ''.....वह चाह उठती कि दो बाँहे उसे भी सहारा देने को हों। इस नीरवता में कुछ अस्फुट शब्द उसे भी संबोधन करें।''[85] किन्तु सुषमा एक जिम्मेदार वार्डन थी। वह अपने कर्त्तव्य–पथ पर अग्रसर होते अपने हृदय पर पत्थर रखकर, नील से कहती है ''नील, अब तुम मुझसे न मिला करो।''..... निर्धन मैं भले ही रही होऊँ, पर स्वाभिमानी भी बहुत रही। जीवन में कभी–कभी ऐसे अवसर भी आये, जब कि मैं अपने शरीर के मोल से धन और आराम पा सकती थी। पर वह मैंने स्वीकार नहीं किया। .....यहाँ लोग किसी को जीने नहीं देते। इसीलिए मैं तुमसे कह रही थी कि मेरी जिन्दगी खत्म हो चुकी है। मैं केवल साधन हूँ। मेरी भावना का कोई स्थान नहीं। विवाह करके परिवार को निराधार छोड़ देना मेरे लिए सम्भव नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिन्दगी के लिए ढाल लिया है। तुम चले जाओगे तो मैं फिर अपने को इन्हीं प्राचीरों में बन्दी कर लूँगी।''[86] नील को कहे एक–एक शब्द सुषमा की आन्तरिक व्यथा को उद्घाटित करते हैं। उसके शब्दों में न कोई दुराव है और न ही मिथ्याभिमान, एक–एक शब्द उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं को विश्लेषित करता है। अर्थाभाव में पारिवारिक भरण–पोषण के दायित्व को वह बखूबी निभाती है। वह मानसिक दुर्बलताओं को नियम–संयम एवं विचारात्मक ईगो से भग्न करते, विजय का दम्भ तो भरती है लेकिन उसका अन्तस कुंठित–राग और नैतिक–विवेक के द्वन्द्व से त्रस्त है।

पंजाबी–उपन्यासों में भी नारी–चरित्र अर्थाभाव से कुंठित हुए हैं। उनकी ये कुंठा परिस्थितियों वश विविध रूपों में अभिव्यक्त हुई है। 'तर्कस टंगिआ जंड' का नायक जगीरू एक खेतिहर मजदूर है। जगीरू स्वामीभक्त ईमानदार श्रमिक है। वह अपने स्वामी गुरुबचन सिंह के पुत्र को अभियोग से बचाने के लिए उसका अपराध अपने ऊपर ले लेता है। जगीरू कैद कर लिया जाता है लेकिन एक निर्मल व्यक्तित्व का जगीरू इस अभियोग को सहने में असमर्थ है। परिणामतः वह रुग्णावस्था में मृत्यु पाता है। जगीरू की पत्नी रूक्की स्वाभिमानी और साहसी नारी है। वह वैधव्य में अर्थाभाव वश घास काटती है और गोबर लीपती है किन्तु अपने सतीत्व को भंग नहीं होने देती। अर्थाभाववश भले ही उसका पुत्र को शिक्षित करने का स्वप्न अधूरा ही रह जाता है। अर्थाभाव में उसकी कुंठा का उदात्तीकृत रूप दिखाई देता है। वह अपनी कुंठा–निवृत्ति के लिए मेहनत–मजदूरी करती है। उसका यह साहस सराहनीय है।

'बुलावा' की जैनिब बीबी का पति दुराचारी, लम्पट और अहम्वादी पुरुष है। वह जैनिब बीबी को विविध प्रताड़नाएं देता है। जैनिब बीबी पति की प्रताड़नाओं एवं मानसिक–द्वन्द्वों को सहती है। वह अपने पुत्र फैज को पढ़ाकर उच्च कोटि का कलाकार बनाती है। जैनिब बीबी आजीवन कष्ट झेलकर पुत्र को कलाकार बनाने का स्वप्न पूर्ण करती है। उसकी कुंठा का विरेचन पुत्र के उच्चकोटि के कलाकार बनने में होता है।

'रंग दा पत्ता' की कैली को अर्थाभाव वश अनमेल–विवाह के दंश को झेलना पड़ता है। उसका विवाह अधेड़ उम्र एवं तीन पुत्रों के पिता लखे साहूकार से होता

है। कैली काम–प्रवृत्ति को मातृत्व में प्रक्षेपित करने का प्रयास करती है, किन्तु साहूकार अत्यधिक लम्पट एवं लोलुप–प्रवृत्ति का है। वह कैली को एक बीमा कर्मचारी की अंकशायिनी बनाना चाहता है। कैली को इसका आभास हो जाता है। उसका नारीत्व उसे ललकारता है और वह विद्रोहिणी बनकर अपनी अस्मिता की रक्षा करती है। वह अपने प्रेमी दीपक से परिणय कर लेती है।

4-7 असामान्य नारी पात्र :

'रुकोगी नही राधिका' की राधिका का व्यक्तित्व भावना–प्रधान है। उसका व्यक्तित्व भोक्तृत्व के कारण संकुचित और असामान्य हो गया है। शैशवावस्था में ही माता के परलोक सिधारने के कारण वह पिता के संरक्षण में रही। पिता के एकनिष्ठ स्नेह से उसमें इलेक्ट्रा–ग्रंथि पलने लगती है। पिता के एकनिष्ठ सामीप्य के कारण वह इलेक्ट्रा–ग्रंथि से आक्रान्त है। ''यह प्रायः देखा गया है कि जो लड़कियां इलेक्ट्रा–काम्पलेक्स से ग्रसित होती हैं, वे विवाह कर सुखी नहीं रहती है।'' राधिका चूँकि बचपन से ही पिता के एकनिष्ठ अधिकार–पात्री स्वयं को समझती है इसलिये उसमें प्रतिशोध की भावना प्रबल है। वह अपने पिता के जीवन में जब विमाता विद्या को प्रवेश पाते देखती है, तब वह प्रतिशोध और आक्रोश से रुद्र रूप धारण कर लेती है। वह पिता एवं समाज के पुरुष–वर्ग से घृणा करने लगती है ''पापा केवल पिता, लेखक, वकील बनकर ही संतुष्ट नहीं थे, यह उसके सामने स्पष्ट था। वे जीवन में परिपूर्णता चाहते थे, एक युवा शरीर का साथ, और इसी बोध से राधिका के मन में घोर वितृष्णा भर उठी।''[87] वह अपने पिता से प्रतिशोध लेने के लिए

विदेश–यात्रा करती है। वह अपने आचरण से पिता को ठेस पहुंचाकर उनके पुरुषत्व को चोट पहुँचाना चाहती है। वह विमाता विद्या से भी घृणा करती है ''और यह सब केवल पापा से प्रतिशोध लेने के लिए हुआ। डैन तो जीवन में इसके लिए निमित्त बन गया था।''[88] प्रतिशोध–भावना से आक्रान्त राधिका और डैन का प्रणय–प्रसंग एक विडम्बना मात्र है। दोनों का प्रणय अपने अभावों की पूर्ति चाहता है। इसलिए डैन के प्रति राधिका का प्रेम–सम्बन्ध असहज है। असहजता के कारण उसमें आन्तरिक विकलता विद्यमान है। राधिका पिता की प्रौढ़ता से अभ्यस्त हो चुकी है। इसलिए वह डैन में भी पिता की प्रौढ़ता ढूँढती है जो उसे अप्राप्य है। दूसरी ओर डैन भी राधिका में अपनी पत्नी को ढूँढता है वह भी उसे अलभ्य है। अंततः डैन राधिका से कहता है ''राधिका, तुम मुझमें अपना पिता ढूँढ रही थी, वही पिता जिसे त्रास देने के लिए तुम मेरे साथ चली आयी थी। पर मैंने तुम्हारे पिता की जगह स्थापित नहीं होना चाहा, मैं तो स्वतंत्र व्यक्तित्व हूँ.....और मैं तुममें अपना खोया यौवन ढूँढ़ रहा था। अपनी पत्नी के छोड़कर चले जाने की कड़ुवाहट धोना चाहता था, पर शायद हम दोनों ही सफल नहीं हुए।''[89]

राधिका के व्यक्तित्व में पुरुष–हंता–प्रवृत्ति की अधिकता है। राधिका अपने प्रणय–अभिनय द्वारा पहले तो पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करती है, जब पुरुष उसकी ओर आकृष्ट होते हैं तब उन्हें आहत कर, वह अपने अहं की तुष्टि करती है। वह प्रत्येक पुरुष में अपने पिता को खोजती है। वह ऐसा पुरुष चाहती है जो उसे गुण–अवगुणों सहित समग्र रूप में स्वीकार करे। कई पुरुष उसके जीवन में

आते हैं परन्तु उसके बुद्धि–धरातल पर कोई भी पुरुष खरा नहीं उतरता। राधिका की इस असामान्यावस्था का कारण उसकी पितृ प्रेम–ग्रन्थि है। वह जीवन–पर्यन्त इसी इलेक्ट्रा–ग्रन्थि से संत्रासित है। ''18 साल के विधुर जीवन के बाद किसी व्यक्ति का नये जीवन साथी की तलाश को उस लड़की के द्वारा इस हद तक नापसंद किया जाना कि वह घर ही छोड़ दे, न तो नार्मल सिचुएशन है, न ही आधुनिकता की विडम्बनाओं से उत्पन्न संत्रास से इसका कोई सम्बन्ध। इसी प्रकार, पिता के स्टैडंर्ड से प्रेमी के सन्दर्भों में उपस्थित हर पुरुष को जांचना एक विशेष संस्कार या फादर फिक्सेशन की चीज हो सकती है, आधुनिकता से इसका कोई वास्ता नहीं।''**90**

'माणिक' की दीना बाटलीवाला धन लोलुप युवती है। वह अपनी शरणदात्री नलिनी की माणिक–अंगूठी हड़पने के लिए उसकी हत्या कर फरार हो जाती है। 'चल खुसरो घर आपने' की मालती राज कमल सिंह राजा साहब की परिणीता है। वह अपने पुत्र की मृत्यु पश्चात अत्यधिक दुःखी हो जाती है। वह अवसादग्रस्त रहती है। अतिशय अवसाद उसे विक्षिप्त बना देता है। राजा साहब मालती की परिचर्या हेतु कुमुद को नियुक्त करते हैं। मालती असामान्य होने पर भी पति पर एक छत्र अधिकार चाहती हैं। उसे पति के जीवन में किसी भी नारी का पदार्पण असह्य है। वह कुमुद को अपनी आग्नेय–दृष्टि से ऐसे भेदती है कि उसे मानो अभी ही भस्म कर देगी। अन्ततः कुमुद को मालती–समक्ष पराजित हो, नौकरी त्याग कर जाना पड़ता है।

'गैंडा' की सुपर्णा के पति रोहिताश्वदत्ता उच्चाधिकारी हैं। वह पति के पद की महिमा से गौरवान्वित है। पति के उच्च–पद का गर्व उसे नारी–समुदाय में कुख्याति देता है। रोहिताश्वदत्ता का राज से प्रणय–प्रसंग सुपर्णा को असहनीय है। वह अवसाद–ग्रस्त हो स्वगत भाषण में तल्लीन रहती। ''बातें करते–करते, जब कभी, अविरल अश्रुधारा उसका ब्लाउज भिगो देती या अपनी ही व्यंग्यात्मक हँसी की तीखी खनक अपने ही कानों में बजती, तो वह निर्जन वन में अपनी ही पगध्वनि से चौंकी भय त्रस्ता हरिणी–सी ही चौंक कर कांपने लगती। तब क्या वह धीरे–धीरे अपना मानसिक संतुलन खो रही थी?''[91] सुपर्णा शनैः–शनैः असामान्यावस्था में पहुँचती है। उसका अन्तर्मन इसलिए भी मर्माहत होता है क्योंकि सुपर्णा की अन्तरंग सखी ने उसके गृह में सेंध लगा कर, उसके पति को चुराया था। वह इस सदमें को सहन नहीं कर सकी। अंततः वह असामान्य हो जाती है।

'सूरज मुखी अंधेरे के' की रत्ती को बचपन में किए गए शारीरिक–शोषण एवं प्रियतम असद के परलोक सिधारना, असामान्य बना देते हैं। उसे दोहरा आघात लगता है। बाल्यावस्था के खूनी धब्बे उसके व्यक्तित्व की कोमल कोपलों को प्रस्फुटित होने से पूर्व ही कुचल देते हैं। उसे समाज के ताने सुनकर चंडिका बनना पड़ता है। वह एक–एक कर, प्रत्येक पुरुषों के पुरुषतत्व को रौंदती चली जाती है। उसकी जीवन–बेला में विविध पुरुषों का आगमन होता है। रंजन, रोहित, सुब्रामनियम, भानुराव तो उसके समक्ष परिणय–प्रस्ताव भी रखते हैं लेकिन वह सब को अस्वीकारती है।

रति के अन्तस में पुरुष–वर्ग के प्रति घृणा एवं प्रतिशोधाग्नि प्रज्जवलित है। इस प्रतिशोधाग्नि ने उसके नारीत्व को भस्म कर दिया है। वह कभी भी सम्पूर्ण औरत नहीं बन पाई। वह मात्र औरत का एक चिथड़ा बनकर रह जाती है। ''उसकी देह उत्तेजनाहीन एवं ठंडी या फ्रिजिड हो गई। उसका व्यवहार या आचरण असामान्य हो गया। मानसिक स्तर पर यौन सम्बन्धों के लिए इच्छुक रहते हुए भी वह शारीरिक स्तर पर काठ हो गई।''[92] दिवाकर के आगमन से रति का जीवन सामान्य हो जाता है।

'सूरज ते समुन्दर' की सोना का पति इन्दर एक सुप्रसिद्ध लेखक है। पति द्वारा उपेक्षित सोना को सौतिया–डाह का भी दंश सहना पड़ता है। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, वह अपने को संतुलित बनाए थी कि अकस्मात् उसे संत द्वारा किए गए बलात्कार ने असामान्य बना दिया। सोना का हृदय रूदन की भंयकर चीत्कार से विदीर्ण हो गया। वह चीखती, चिल्लाती और अचेत हो जाती थी। उसका कोमल मन चीत्कार कर, उसे मूर्छित कर देता। वह प्रायः बड़बड़ाती रोती और फिर अचेत हो जाती। डाक्टरी उपचार से सोना की मानसिक स्थिति में सुधार आता है। उसका देवर अजीत भाभी की रुग्णावस्था में अत्यधिक सेवा–सुश्रूषा करता है। सोना को सामान्यावस्था में लाने का सम्पूर्ण श्रेय अजीत को जाता है।

'हॅक दी मंग' की राज और विक्रम (विक्की) का दाम्पत्य–जीवन खुशहाल था। अकस्मात् ही राज के चाचा का देहावसान हो जाता है। राज यह सदमा सहन नहीं कर पाती। वह पारिवारिक जीवन से उदासीन रहने लगती है। राज की मौनता विक्की को उदासीन बना देती है। राज इन दुर्बल क्षणों में धैर्य की डोर को कस

कर थामें थी। उसने बड़े संयम एवं धैर्य से अपने अधिकार की मांग की। वह एक निष्ठता की कसौटी पर खरी उतरती है और विक्की को पुनः प्राप्त कर लेती है।

'तेरहवां सूरज' की मीता का परिणय श्री पुरी से होता है। मीता इस अनमेल–विवाह से संत्रासित है। यह संत्रास शनैः–शनैः उसे मानसिक रोगिणी बना देता है। उसे लगता है कि पुरी एक शिकारी है जिसने उसका शिकार किया है। एक दिन केले के वृक्ष के पीछे, चूहे का पिंजरा देखकर वह चीखकर–मूर्छित हो जाती है। चेतनता आने पर वह कहती है ''सिर्फ ऐना याद ऐ.....जापिआ सी कि किसे ने फुल्लां नू चूहिआं वांग फड़ण लई एह पिंजरा रखिआ होएआ ऐ।''[93] मीता के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह मिस्टर पुरी के धन रूपी पिंजरे में कैद है। उसका पुनः अचेत होना इस बात का सूचक है कि वह यह नहीं चाहती कि उसकी तरह कोई भी इस अत्याचार से पीड़ित हो। उसके हृदय में पुरी के प्रति अत्यधिक घृणा है। एकाएक उसकी जिन्दगी में संजय का प्रवेश होता है। मीता भी संजय के प्रति आकर्षित होती है। वह एक दिन संजय से कहती है ''.....मेरा जीअ करदा ऐ.....मेरा कफन होर किसे दे हॅथ दा न होवे, सिर्फ तेरे हॅथ दा संजय।'' मीता के अचेतन में पति के प्रति घृणा का यह भाव स्पष्टतः परिलक्षित है कि उसे पति के हाथों का कफन भी स्वीकार्य नहीं है। कारण स्पष्ट है कि धन से किसी का तन तो क्रय किया जा सकता किन्तु मन तो प्रेम से ही जीता जा सकता है।

'पीले पत्तेयां दी दास्तान' की उषा का परिणय भगीरथ से होता है। भगीरथ उषा पर अत्यधिक अत्याचार करता है। इन अत्याचारों से एक आदर्शवान पत्नी उषा के स्थान पर एक विद्रोहणी उषा का जन्म हुआ। उषा का व्यवहार परिवर्तित हो

गया। ऊषा ने बाल कटवा दिए। वह अब ताश–खेलती, शराब पीती, सिगरेट पीती और रात–भर घर से बाहर रहती। वह रात में कम्पोज की गोली खाती है। एक आदर्श उषा के इस व्यवहार–परिवर्तन का कारण उसके पति की प्रताड़नाएं ही हैं। उषा के इस परिवर्तन का जिम्मेदार पूर्णतः उसका पति ही है। जो उसे प्रताड़ित करता हैं।

हिन्दी–पंजाबी महिला उपन्यासकारों ने नारी चरित्र को केवल बाह्य परिस्थितियों से ही अंकित नहीं किया है। अपितु उन्होंने उनकी समस्त आन्तरिक परिस्थितियों की भी अभिव्यक्ति की है। अमृता–प्रीतम के उपन्यासों में मनोविश्लेषण की यह पद्धति रचनात्मक अनिवार्यता बन गई। हिन्दी–उपन्यासों में इन मनोविश्लेषणात्मक और असाधारण मनोवैज्ञानिक नारी–पात्रों के विनियोग की कुछ मौलिक समस्याएं हैं। जिन्हें समय–समय पर उपन्यास–लेखिकाओं ने चित्रित किया है। इन असामान्य और मनोविश्लेषणात्मक चरित्रों का समाज के साथ संतुलन क्यों नहीं हो पाता? इस सामाजिक वितुलन को सूचित करना भी इनका मुख्य ध्येय है। इन संवेदनशील नारियेां के चरित्रों की प्रतिक्रियाओं की इन्होंने सहज अभिव्यक्ति इसलिए भी की है कि वह इनके आन्तरिक संसार में प्रविष्ट होकर इनके नियम–विधान की वास्तविकता का विश्लेषण कर सकें। हिन्दी और पंजाबी उपन्यासों के मनोविश्लेषण प्रधान नारी–पात्रों और असामान्य नारी–पात्रों को एक साथ रख कर उनका विश्लेषण किया गया है। 'आल्हणा' की नीना 'इक सी अनीता' की अनीता, 'एकता' की एकता, 'तेरहवां सूरज' की मीता आदि पंजाबी–उपन्यासों के मनोविश्लेषणवादी नारी–पात्रों का उपन्यास लेखिकाओं ने अत्यन्त स्वाभाविक और

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती, 'माणिक' की दीना बाटलीवाला, 'चल खुसरो घर आपने' की मालती, 'गैंडा' की सुपर्णा आदि की हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं ने सहज स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति की है।

सन्दर्भ संकेत

1.	मृदुला गर्ग	–	मैं और मैं	– पृ0सं0–10
2.	शिवानी	–	चल खुसरो घर आपने	– पृ0सं0–51
3.	शिवानी	–	कैंजा	– पृ0सं0–11
4.	शिवानी	–	कैंजा	– पृ0सं0–51
5.	उषा प्रियंवदा	–	रूकोगी नहीं राधिका	– पृ0सं0–38
6.	उषा प्रियंवदा	–	रूकोगी नहीं राधिका	– पृ0सं0–43
7.	शिवानी	–	माणिक	– पृ0सं0–35
8.	शिवानी	–	चल खुसरो घर आपने	– पृ0सं0–19
9.	शिवानी	–	चल खुसरो घर आपने	– पृ0सं0–83
10.	शिवानी	–	कृष्ण कली	– पृ0सं0–49
11.	उषा प्रियंवदा	–	पचपन खम्भे लाल दीवारें	– पृ0सं0–31, 37
12.	जसवन्त कौर	–	बलिदान	– पृ0सं0–63
13.	जसवन्त कौर	–	बलिदान	– पृ0सं0–88
14.	जसवन्त कौर	–	बलिदान	– पृ0सं0–118
15.	जसवन्त कौर	–	बलिदान	– पृ0सं0–124
16.	जसवन्त कौर	–	बलिदान	– पृ0सं0–135,136
17.	अमृता प्रीतम	–	इक सवाल	– पृ0सं0–29,30
18.	अमृता प्रीतम	–	रंग दा पत्ता	– पृ0सं0–28

19.	अमृता प्रीतम	–	अग्ग दी लकीर	– पृ0सं0–86
20.	डॉ0 दलीप कौर टिवाणा	–	वाट हमारी	– पृ0सं0–30,31
21.	डॉ0 दलीप कौर टिवाणा	–	वाट हमारी	– पृ0सं0–44
22.	हरप्रीत कौर	–	हड्ड माँस दी औरत	– पृ0सं0–66
23.	Frieda Fordham	–	An Introduction to Jung's Psychology	– Pg. No.-33
24.	शिवानी	–	चौदह फेरे	– पृ0सं0–26
25.	शिवानी	–	किशनुली	– पृ0सं0–64
26.	शिवानी	–	कृष्णकली	– पृ0सं0–210
27.	शिवानी	–	कृष्णकली	– पृ0सं0–211
28.	कृष्णा सोबती	–	डार से बिछुड़ी	– पृ0सं0–38
29.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा	पृ0सं0–28
30.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा	– पृ0सं0–54
31.	शशि प्रभा शास्त्री	–	परछाइयों के पीछे	– पृ0सं0–99
32.	शशि प्रभा शास्त्री	–	अमलतास	– पृ0सं0–169
33.	शशि प्रभा शास्त्री	–	सीढ़ियां	– पृ0सं0–325
34.	डॉ0 श्याम बाला गोयल में नारी भावना	–	भक्तिकालीन रामकाव्य तथा कृष्णकाव्य में नारी भावना–एक तुलनात्मक अध्ययन	– पृ0सं0–200

35. मृदुला गर्ग – वंशज – पृ0सं0–67, 68

36. मृदुला गर्ग – वंशज – पृ0सं0–83

37. शिवानी – गैंडा – पृ0सं0–23

38. Heidbreder – Seven Psychologics – पृ0सं0–382

39. अमृता प्रीतम – एरियल पृ0सं0–120

40. डॉ0 सावित्री डागा – आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्य में नारी – पृ0सं0–167

41. डॉ0 राम विनोद सिंह – हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में नारी चरित्र – पृ0सं0–231

42. मन्नू भण्डारी – एक इंच मुस्कान – पृ0सं0–112

43. मन्नू भण्डारी – एक इंच मुस्कान – पृ0सं0–155

44. मन्नू भण्डारी – एक इंच मुस्कान – पृ0सं0–209

45. मन्नू भण्डारी – एक इंच मुस्कान – पृ0सं0–209

46. उषा प्रियंवदा – शेष यात्रा – पृ0सं0–136

47. निरूपमा सेवती – मेरा नरक अपना है – पृ0सं0–23,26,39

48. मृदुला गर्ग – एक तिकोना दायरा – पृ0सं0–74

49. अमृता प्रीतम – एकता – पृ0सं0–34

50. अमृता प्रीतम – दिल्ली दीआं गलियाँ पृ0सं0–98

51. अमृता प्रीतम – दिल्ली दीआं गलियाँ – पृ0सं0–99

52. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – चिन्तामणि (भाग–1 लोभ और प्रीति) – पृ0सं0–77

53.	प्रभाकर श्रोत्रिय	–	प्रसाद का साहित्य–प्रेम सात्विक दृष्टि	– पृ0सं0–5
54.	शिवानी	–	चल खुसरो घर आपने	– पृ0सं0–81
55.	डॉ0 दलीप कौर टिवाणा	–	पीले पत्तेयाँ दी दास्तान	– पृ0सं0–55
56.	मन्नू भंडारी	–	आपका बंटी	– पृ0सं0–35, 36
57.	कृष्णा सोबती	–	तिन पहाड़	– पृ0सं0–124,
58.	शशि प्रभा शास्त्री	–	अमलतास	– पृ0सं0–146, 147, 151
59.	शिवानी	–	माणिक	– पृ0सं0–33
60.	शिवानी	–	माणिक	– पृ0सं0–42
61.	शिवानी	–	माणिक	– पृ0सं0–45
62.	शशि प्रभा शास्त्री	–	सीढ़ियाँ	पृ0सं0–101
63.	अमृता प्रीतम	–	दिल्ली दीआं गलियां	– पृ0सं0–98, 99
64.	डॉ0 दलीप कौर टिवाणा	–	सब देश पराया	– पृ0सं0–82, 86
65.	शिवानी	–	भैरवी	– पृ0सं0–59
66.	शिवानी	–	भैरवी	– पृ0सं0–48
67.	शिवानी	–	चौदह फेरे	– पृ0सं0–30
68.	शिवानी	–	गैंडा	– पृ0सं0–23
69.	मन्नू भंडारी	–	स्वामी	– पृ0सं0–41
70.	मन्नू भंडारी	–	स्वामी	– पृ0सं0–104
71.	मन्नू भंडारी	–	स्वामी	– पृ0सं0–78, 79

72.	मेहरून्निसा परवेज	–	पत्थर वाली गली	– पृ0सं0–12,
73.	शिवानी	–	श्मशान चम्पा	– पृ0सं0–101, 102, 104
74.	अमृता प्रीतम	–	जय श्री	पृ0सं0–52
75.	अमृता प्रीतम	–	पिंजर	– पृ0सं0–45
76.	अमृता प्रीतम	–	तेरहवां सूरज	– पृ0सं0–112
77.	मेहरून्निसा परवेज	–	आँखों की दहलीज	– पृ0सं0–64
78.	शिवानी	–	सुरंगमा	– पृ0सं0–68
79.	मृदुला गर्ग	–	उसके हिस्से की धूप	– पृ0सं0–94
80.	मन्नू भण्डारी	–	एक इंच मुस्कान	– पृ0सं0–77
81.	मन्नू भण्डारी	–	एक इंच मुस्कान	– पृ0सं0–87
82.	मन्नू भण्डारी	–	एक इंच मुस्कान	– पृ0सं0–94
83.	डॉ0 दलीप कौर टिवाणा	–	दूसरी सीता	– पृ0सं0–74
84.	जसवन्त कौर	–	बलिदान	– पृ0सं0–32
85.	उषा प्रियंवदा	–	पचपन खम्भे लाल दीवारें	– पृ0सं0–123
86.	उषा प्रियंवदा	–	पचपन खम्भे लाल दीवारें	पृ0सं0–66, 67, 68
87.	उषा प्रियंवदा	–	'रूकोगी नहीं राधिका'	– पृ0सं0–39
88.	उषा प्रियंवदा	–	'रूकोगी नहीं राधिका'	– पृ0सं0–24
89.	उषा प्रियंवदा	–	'रूकोगी नहीं राधिका'	– पृ0सं0–29,30
90.	सं0 धर्मवीर भारती	–	धर्म युग, 26 अक्टूबर,	– पृ0सं0–47

1969

91. शिवानी – गैंडा – पृ0सं0–8

92. सम्पादक– नरेन्द्र मोहन – आधुनिक हिन्दी उपन्यास – पृ0सं0–16

93. अमृता प्रीतम – तेरहवां सूरज – पृ0सं0–108